

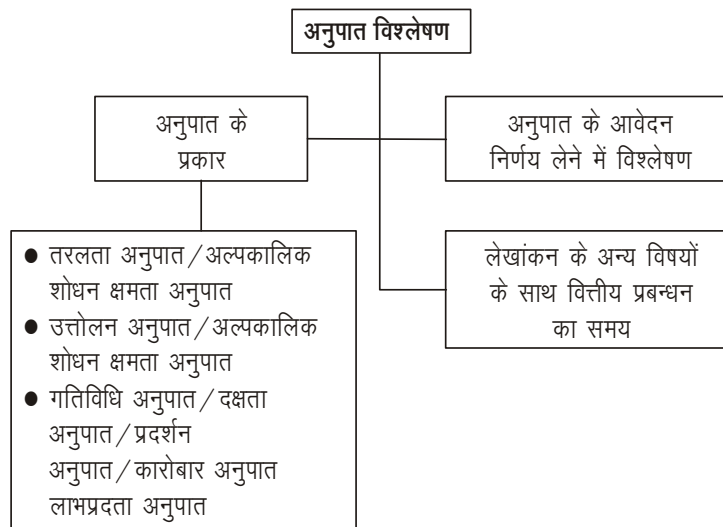
3

वित्तीय विश्लेषण एवं नियोजन—अनुपात विश्लेषण (FINANCIAL ANALYSIS AND PLANNING-RATIO ANALYSIS)

अध्ययन परिणाम (Learning Outcomes)

- विश्लेषण के लिए वित्तीय आँकड़े के स्रोतों पर चर्चा करें।
- वित्तीय अनुपात और इसके प्रकारों पर चर्चा करें।
- वित्तीय विवरण का विश्लेषण करने के लिए वित्तीय अनुपात का उपयोग करने पर विचार करें।
- एक इकाई के मुनाफे और वित्तीय स्थिति का मूल्यांकन करने के लिए निवेशकों उधारदाताओं, आपूर्तिकर्ताओं, प्रबंधकों आदि के परिप्रेक्ष्य से अनुपात का विश्लेषण करें।
- वित्तीय विश्लेषण के प्रयोक्ताओं और उद्देश्यों का वर्णन : एक सरसरी निगाह में।
- डु पॉट विश्लेषण पर चर्चा करें।
- अनुपात विश्लेषण की सीमाएँ बताइए।

अध्याय अवलोकन (Chapter Overview)



3.1 परिचय (Introduction)

वित्तीय विश्लेषण, योजना और निर्णय लेने का आधार वित्तीय विवरण है, जो मुख्य रूप से आर्थिक चिट्ठा और लाभ और हानि खाते से मिलकर होते हैं। लाभ और हानि खाता चिंता की परिचालन गतिविधियों को दर्शाता है और आर्थिक चिट्ठा एक खास बिन्दु पर अधिगृहीत परिसम्पत्तियों और देनदारियों के शेष मूल्य को दर्शाता है।

हालांकि, उपर्युक्त विवरण सभी आवश्यक और प्रासंगिक जानकारी का खुलासा नहीं करते हैं। सामग्री और प्रासंगिक जानकारी प्राप्त करने के उद्देश्य के लिए किसी उद्यम की वित्तीय ताकत और कमजोरियों का पता लगाने के लिए आवश्यक है, वित्तीय विवरणों में दर्शाए गए आँकड़ों का विश्लेषण करना आवश्यक है।

वित्तीय प्रबंधक के पास कुछ विश्लेषणात्मक उपकरण हैं, जो वित्तीय विश्लेषण और योजना में सहायता करते हैं। मुख्य उपकरण अनुपात विश्लेषण और नकदी प्रवाह विश्लेषण हैं। हम पहले अनुपात विश्लेषण पर चर्चा करेंगे।

3.2 अनुपात एवं अनुपात विश्लेषण (Ratio and Ratio Analysis)

आइए पहले अनुपात की परिभाषा और अनुपात की परिभाषा को समझें।

3.2.1 अनुपात की परिभाषा (Definition of Ratio)

एक अनुपात को "दो या दो से अधिक चीजों के बीच संबंध के रूप में दो गणितों का संकेत दिया गया है।" अनुपात का अर्थ या लेखा अनुपात जो संबंधों के आँकड़ों के संबंध में गणितीय अभिव्यक्ति है।

3.2.2 अनुपात विश्लेषण (Ratio Analysis)

इस गणना के उद्देश्य की गणना कैसे की जाती है, यह परिभाषित करके वित्तीय अनुपात शब्द समझाया जा सकता है ?

(a) गणना आधार

- गणितीय शब्दों में व्यक्त संबंध;
- दो व्यक्तिगत आँकड़े या आँकड़ों के समूह के बीच;
- कुछ तार्किक तरीके से एक-दूसरे के साथ जुड़े; और
- चिंता के वित्तीय विवरणों से चयनित।

(b) वित्तीय अनुपात के लिए उद्देश्य यह है कि सभी हितधारक (मालिक, निवेशक, उधारदाता, कर्मचारी आदि) इसके बारे में निष्कर्ष निकाल सकते हैं।

- प्रदर्शन (अतीत, वर्तमान और भविष्य)
- एक फर्म की ताकत और कमजोरियों; और
- फर्म के सम्बन्ध में निर्णय ले सकते हैं।

अनुपात विश्लेषण इस तथ्य पर आधारित है कि एक अकेले लेखांकन आँकड़ा किसी भी सार्थक जानकारी को व्यक्त नहीं कर सकता है, लेकिन जब किसी अन्य व्यक्ति के रिश्तेदार के रूप में व्यक्त किया जाता है, तो यह निश्चित रूप से कुछ महत्वपूर्ण जानकारी प्रदान कर सकता है।

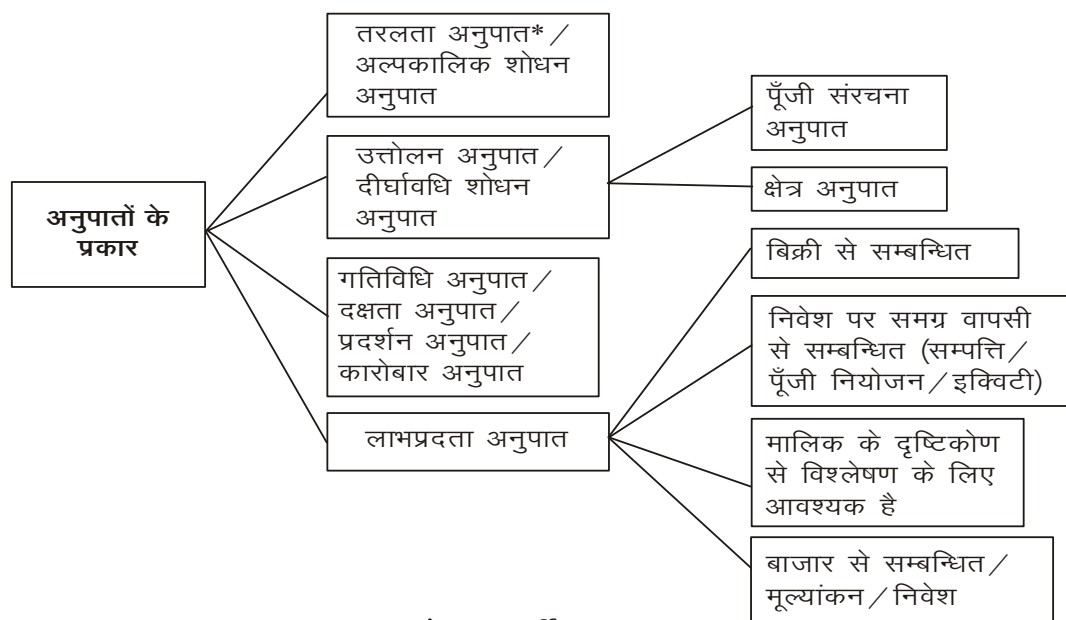
अनुपात विश्लेषण सिर्फ आर्थिक चिट्ठा, आय विवरण और नकदी प्रवाह के बयान से अलग संख्याओं की तुलना नहीं कर रहा है। यह पिछले वर्षों, अन्य कम्पनियों उद्योग या वित्तीय अर्थव्यवस्था के उद्देश्य के लिए आम तौर पर अर्थव्यवस्था की तुलना कर रहा है।

3.2.3 विश्लेषण के लिए वित्तीय डेटा के स्रोत (Sources of Financial Data for Analysis)

वित्तीय विवरण विश्लेषण के लिए जानकारी के स्रोत हैं।

- (i) वार्षिक रिपोर्ट
- (ii) अंतरिम वित्तीय विवरण
- (iii) खातों को नोट्स
- (iv) नकदी प्रवाह का विवरण
- (v) व्यावसायिक पत्रिकाएँ
- (vi) क्रेडिट और निवेश सलाहाकार सेवाएँ।

3.3 अनुपातों के प्रकार (Types of Ratios)



अनुपातों का वर्गीकरण (Classification of Ratios)

* तरलता अनुपात की जाँच प्रासंगिक कुल बिक्री अनुपात को ध्यान में रखते हुए की जानी चाहिए।

3.3.1 तरलता अनुपात (Liquidity Ratios)

शब्द 'तरलता' और 'अल्पकालिक शोधन क्षमता' का उपयोग समानार्थक रूप से किया जाता है।

तरलता या अल्पकालिक शोधन क्षमता का मतलब है कि व्यापार की अपनी अल्पकालिक देनदारी का भुगतान करने की क्षमता है। अल्पकालिक देयताओं का भुगतान करने में असमर्थता इसकी विश्वसनीयता और इसके क्रेडिट श्रेणी को प्रभावित करती है। व्यवसाय की ओर निरन्तर न्यूनता वाणिज्यिक दिवालियापन की ओर जाता है। अंततः इस प्रकार की वाणिज्यिक दिवालियापन से इसकी बीमारी और विघटन हो सकता है। लघु अवधि के उधारकर्ताओं और व्यापारियों को लेनदारों को उनकी वित्तीय हिस्सेदारी के कारण अपनी तरलता की स्थिति जानने में बहुत रुचि है। दोनों के लिए पर्याप्त तरलता की कमी और अतिरिक्त तरलता संगठन के लिए खराब है।

विभिन्न तरलता अनुपात हैं :

- (a) वर्तमान अनुपात
- (b) त्वरित अनुपात या एसिड परीक्षण अनुपात
- (c) नकद अनुपात या निरपेक्ष तरलता अनुपात
- (d) मूल रक्षा अंतराल या अंतराल उपाय अनुपात
- (e) शुद्ध कार्यशील पूँजी अनुपात।

(a) वर्तमान अनुपात : वर्तमान अनुपात अल्पावधि शोधन क्षमता का सबसे अच्छा ज्ञात उपायों में से एक है, यह अल्पकालिक तरलता का सबसे सामान्य उपाय है।

इस अनुपात का मुख्य प्रश्न यह है कि “क्या आपके व्यवसाय की वर्तमान सम्पत्ति में संभावित मार्जिन सुरक्षा के संभावित घाटे के साथ अपने वर्तमान ऋण का भुगतान कार्यक्रम पूरा करने के लिए पर्याप्त सम्पत्ति है?”

$$\text{वर्तमान अनुपात} = \frac{\text{वर्तमान सम्पत्ति}}{\text{वर्तमान दायित्व}}$$

जहाँ,

वर्तमान सम्पत्ति = माल + विविध ऋणदाता + नकद और बैंक बैलेंस + प्राप्तियाँ / स्रोत + ऋण और अग्रिम + प्राप्त निवेश + कोई अन्य वर्तमान सम्पत्ति

वर्तमान दायित्व = सामान और सेवाओं के लिए ऋणदाता + अल्पकालिक ऋण + बैंक ओवरड्राफ्ट + पूँजी क्रेडिट + बकाया खर्च + कराधान के लिए प्रावधान + प्रस्तावित लाभांश + दावा न किए गए लाभांश + कोई भी अन्य वर्तमान देयताएँ

मुख्य अनुपात में यह अनुपात इस प्रकार है “क्या आपके व्यवसाय में चालू परिसम्पत्तियों में संभावित नुकसान के लिए सुरक्षा के मार्जिन के साथ अपने वर्तमान ऋण का भुगतान कार्यक्रम पूरा करने के लिए पर्याप्त वर्तमान सम्पत्ति है ?”

व्याख्या (Interpretation)

सामान्यतः स्वीकार्य मौजूदा अनुपात 2 : 1 होता है। लेकिन क्या एक विशिष्ट अनुपात संतोषजनक है या नहीं, व्यवसाय की प्रकृति पर निर्भर करता है और इसकी मौजूदा सम्पत्ति और देनदारियों की विशेषताएँ।

(b) त्वरित अनुपात : त्वरित अनुपात को कभी-कभी “अम्ल परीक्षण” अनुपात कहा जाता है और यह तरलता से सबसे अच्छा उपाय है।

$$\text{त्वरित अनुपात व एसिड-परीक्षण अनुपात} = \frac{\text{त्वरित सम्पत्ति}}{\text{वर्तमान दायित्व}}$$

जहाँ,

त्वरित सम्पत्ति = वर्तमान सम्पत्ति - इन्वेंट्री - प्रीपेड व्यय

वर्तमान दायित्व = जैसा कि वर्तमान अनुपात में उल्लिखित है।

त्वरित अनुपात, वर्तमान अनुपात से छोटी अवधि की तरलता का अधिक रूढ़िवादी उपाय है। प्रश्न का जबाव देने में मदद करता है। “यदि सभी ब्रिकी राजस्व गायब हो जाए तो क्या मेरा व्यवसाय आसानी से परिवर्तनशील त्वरित धन के साथ अपने वर्तमान दायित्वों को पूरा कर सकता है ?”

त्वरित परिसम्पत्तियों : में केवल नकद और नजदीकी परिसम्पत्तियां शामिल हैं माल को मौजूदा परिसम्पत्तियों से यह अनुमान लगाया जाता है कि ये 'नजदीकी परिसम्पत्तियों' के पास नहीं हैं और यह भी क्योंकि वित्तीय कठिनाइयों की सूची में केवल परिसमापन मूल्य पर ब्रिकी योग्य हो सकता है। लेकिन एक विक्रेता के बाजार सूची में भी नकद सम्पत्तियों के पास है।

व्याख्या (Interpretation)

1 : 1 एक एसिड-परीक्षण संतोषजनक माना जाता है जब तक कि “त्वरित परिसम्पत्तियों” के बहुसंख्यक खाते खातों में प्राप्त होने योग्य नहीं होते हैं, और खातों की प्राप्ति योग्य संग्रह, वर्तमान देनदारियों का भुगतान करने के लिए अनुसूची के पीछे होता है।

(c) नकद अनुपात/निरपेक्ष तरलता अनुपात : नकदी अनुपात व्यापार की पूर्ण तरलता को मापता है। यह अनुपात केवल उन्नीस चलनिधि के साथ उपलब्ध है।

कम्पनी। इस अनुपात की गणना निम्नानुसार की जाती है।

$$\text{पूँजी अनुपात} = \frac{\text{बैंक और पूँजी बैलेंस + बिक्री योग्य प्रतिभूतियां}}{\text{वर्तमान दायित्व}} \\ \text{और} \\ \frac{\text{पूँजी और बैंक बैलेंस + वर्तमान निवेश}}{\text{वर्तमान दायित्व}}$$

व्याख्या (Interpretation)

निरपेक्ष तरलता अनुपात केवल नकदी के मामले में अल्पकालिक नकदी की जाँच करता है और ब्रिकी योग्य प्रतिभूतियों/वर्तमान निवेश

(d) मूल रक्षा अंतराल/अंतराल उपाय :

$$\text{मूल रक्षा अंतराल} = \frac{\text{पूँजी और बैंक बैलेंस + बिक्री योग्य प्रतिभूतियां}}{\text{परिचालन व्यय ÷ दिनों की संख्या (360)}} \\ \text{और} \\ \text{अंतराल उपाय} = \frac{\text{वर्तमान सम्पत्ति - इवेन्ट्री}}{\text{दैनिक परिचालन व्यय}}$$

$$\text{दैनिक परिचालक व्यय} = \frac{\text{बेचे गए माल की लागत + प्रशासन और अन्य बिक्री}}{\text{सामान्य व्यय-मूल्य ह्रास और अन्य गैर नकद व्यय}} \\ \text{एक वर्ष में दिनों की संख्या}$$

व्याख्या (Interpretation)

अगर किसी कारण से सारी कम्पनी की राजस्व अचानक समाप्त हो जाती है, तो बेसिक डिफेंस अंतराल में उन दिनों की संख्या तय करने में मदद मिलेगी, जब कम्पनी अतिरिक्त वित्तपोषण की सहायता के बिना अपने नकद व्यय को कवर कर सकती है।

(e) **शुद्ध कार्यशील पूँजी अनुपात** : शुद्ध कार्यशील पूँजी अनुपात की तुलना में नकदी प्रवाह का एक और उपाय है। इस गणना का परिणाम एक सकारात्मक संख्या होना चाहिए। इसे नीचे दिखाया गया है :

$$\text{शुद्ध कार्यशील पूँजी अनुपात} = \text{वर्तमान सम्पत्ति} - \text{वर्तमान दायित्व (अल्पकालिक उधार को छोड़कर)}$$

व्याख्या (Interpretation)

बैंकर्स समय के साथ शुद्ध कार्यशील पूँजी को देखते हैं ताकि वित्तीय संकटों का सामना करने के लिए कम्पनी की क्षमता निर्धारित की जा सके। ऋण अक्सर न्यूनतम कार्यशील पूँजी आवश्यकताओं से जुड़ा होता है।

3.3.2 दीर्घकालिक शोधन अनुपात/उत्तोलन अनुपात (Long Term Solvency Ratio/Leverage Ratios)

उत्तोलक अनुपात को उन वित्तीय अनुपातों के रूप में परिभाषित किया जा सकता है जो दीर्घकालिक स्थिरता और फर्म की संरचना को मापते हैं। ये अनुपात मालिकों और उधारदाताओं द्वारा प्रदान किए गए निधियों के मिश्रण को इंगित करते हैं और दीर्घकालिक निधियों के उधारकर्ताओं को इसके संबंध में आश्वासन देते हैं :

- (i) ऋण की अवधि के दौरान ब्याज का आवधिक भुगतान और
- (ii) परिपक्वता पर मूलधन की चुकौती।

उत्तोलन अनुपात दो प्रकार के होते हैं :

1. पूँजी संरचना अनुपात

- (a) इक्विटी अनुपात
- (b) ऋण अनुपात
- (c) इक्विटी अनुपात में ऋण
- (d) कुल सम्पत्ति अनुपात में ऋण
- (e) पूँजी लाभ अनुपात
- (f) स्वामित्व अनुपात

2. क्षेत्र अनुपात

- (a) ऋण सेवा क्षेत्र अनुपात ;डीएससीआर)
- (b) ब्याज क्षेत्र अनुपात
- (c) अधिमान लाभांश क्षेत्र अनुपात
- (d) निश्चित प्रभार क्षेत्र अनुपात

3.3.2.1 पूँजी संरचना अनुपात (Capital Structure Ratios)

ये अनुपात दीर्घकालिक शोधन क्षमता की स्थिति पर एक व्यापार और केन्द्र द्वारा उपयोग की जाने वाली वित्तीय तकनीकों में एक अन्तर्दृष्टि प्रदान करता है। आर्थिक चिट्ठा में से केवल निवल निधि और उसका स्रोत मिल सकता है, लेकिन केवल पूँजी संरचना अनुपात स्रोतों के सापेक्ष वजन को दर्शाते हैं।

विभिन्न संरचना अनुपात है :

(a) इक्विटी अनुपात (Equity Ratio) :

$$\text{इक्विटी अनुपात} = \frac{\text{शेयरधारकों की इक्विटी}}{\text{नियोजित पूँजी}}$$

यह अनुपात व्यापार में निवेश किए गए कुल फंड के लिए मालिकों के फंड का अनुपात इंगित करता है। परम्परागत रूप से, यह माना जाता है कि अधिक-से-अधिक मालिकों के फंड का अनुपात कम जोखिम की डिग्री है।

(b) ऋण अनुपात (Debt Ratio):

$$\begin{aligned} \text{ऋण अनुपात} &= \frac{\text{कुल बाहरी दायित्व}}{\text{कुल ऋण} + \text{शुद्ध आय}} \\ &\text{या,} \\ \text{ऋण अनुपात} &= \frac{\text{कुल ऋण}}{\text{शुद्ध सम्पत्ति}} \end{aligned}$$

कुल ऋण या कुल बाहरी देनदारियों में वित्तीय संस्थानों, ऋणपत्र/बॉण्ड, पूँजीगत उपकरणों की खरीद के लिए स्थगित भुगतान व्यवस्था, बैंक उधार, सार्वजनिक जमा और किसी भी अन्य ब्याज वाले ऋण से लघु और दीर्घकालिक उधार शामिल हैं।

व्याख्या (Interpretation)

यह अनुपात एक फर्म की दीर्घकालिक शोधन क्षमता का विश्लेषण करने के लिए प्रयोग किया जाता है।

(c) इक्विटी अनुपात में ऋण (Debt to Equity Ratio) :

$$\begin{aligned} \text{इक्विटी अनुपात में ऋण} &= \frac{\text{कुल बाहरी दायित्व}}{\text{शेयरधारकों की इक्विटी}} \\ &= \frac{\text{कुल ऋण}^*}{\text{शेयरधारकों की इक्विटी}} \\ &= \frac{\text{दीर्घावधि ऋण}^{**}}{\text{शेयरधारकों की इक्विटी}} \end{aligned}$$

* न केवल लंबी अवधि के कर्ज।

** कभी-कभी केवल ब्याज-असर, कुल दायित्व के बजाय दीर्घकालिक ऋण का उपयोग किया जाता है ;वर्तमान देनदारियों के अन्य)

शेयरधारकों की इक्विटी है और अधिमान शेयर पूँजी + संचित लाभ ;फर्जी सम्पत्ति आदि को छोड़कर)

व्याख्या (Interpretation)

इक्विटी अनुपात में एक उच्च ऋण का मतलब है कि लेनदारों के लिए कम संरक्षण, कम अनुपात, दूसरी तरफ, एक व्यापक सुरक्षा कुशन दर्शाता है (यानि लेनदारों का मानना है कि मालिक के धन से आय और पूँजी के संभावित नुकसान को अवशोषित करने में मदद मिल सकती है।) यह अनुपात इक्विटी के संबंध में ऋण निधि का अनुपात इंगित करता है। इस अनुपात को अक्सर पूँजी संरचना के फैलने में तथा साथ ही पूँजी संरचना के निर्णयों (यानी शेयरों और ऋणपत्रों का जारी) से निपटने वाले कानून में कहा जाता है। ऋणदाता इस अनुपात को जानने के लिए बहुत इच्छुक हैं क्योंकि यह ऋण और इक्विटी के सापेक्ष भार दर्शाता है। ऋण इक्विटी अनुपात फर्म के वित्तीय उत्तोलन का सूचक है।

(d) कुल सम्पत्ति अनुपात में ऋण (Debt to Total Assets Ratio) :

यह अनुपात ऋण के साथ वित्त पोषित कुल परिसम्पत्तियों के अनुपात को मापता है और इसलिए, वित्तीय लाभ उठाने की सीमा।

$$\begin{aligned} \text{कुल सम्पत्ति अनुपात में ऋण} &= \frac{\text{कुल बाहरी दायित्व}}{\text{कुल सम्पत्तियां}} \\ &\text{या} \\ &= \frac{\text{कुल ऋण}}{\text{कुल सम्पत्तियां}} \end{aligned}$$

(e) पूँजी लाभ अनुपात (Capital Gearing Ratio) :

ऋण-इक्विटी अनुपात के अतिरिक्त, कभी-कभी पूँजीगत असर अनुपात भी इक्विटी शेयरधारकों से संबंधित निधियों के लिए निर्धारित ब्याज (लाभांश) असर पूँजी का अनुपात दिखाने के लिए गणना की जाती है, अर्थात् इक्विटी निधि या शुद्ध आय।

$$\text{पूँजी लाभ अनुपात} = \frac{\text{(अधिमान शेयर पूँजी + ऋणपत्र + अन्य उधार निधियाँ)}}{\text{(इक्विटी शेयर पूँजी + संचय और अधिशेष - हानियाँ)}}$$

(f) स्वामित्व अनुपात (Proprietary Ratio) :

$$\text{स्वामित्व अनुपात} = \frac{\text{स्वामित्व निधि}}{\text{कुल सम्पत्ति}}$$

स्वामित्व निधि में इक्विटी शेयर पूँजी + अधिमान शेयर पूँजी + संचय और अधिशेष शामिल हैं कुल सम्पत्ति में फर्जी सम्पत्ति और नुकसान शामिल नहीं हैं।

व्याख्या (Interpretation)

यह शेयरधारकों द्वारा वित्त पोषित कुल सम्पत्ति का अनुपात दर्शाता है।

3.3.2.2 क्षेत्र अनुपात (Coverage Ratios)

क्षेत्र अनुपात फर्म की देनदारियों की सेवा करने की फर्म की क्षमता को मापता है। ये अनुपात निश्चित दावों के बीच के संबंध को स्थापित करते हैं और आम तौर पर क्या उपलब्ध है, जिनमें से इन दावों का भुगतान किया जाना है। निश्चित दावों में ये शामिल हैं :

- (i) ऋण पर ब्याज;
- (ii) अधिमान लाभांश;
- (iii) परिपक्वता पर ऋण की किस्त के पुनर्भुगतान या अधिमान पूँजी के पुनर्वित्त का मूलधन चुकाना। निम्न महत्वपूर्ण कवरेज अनुपात है :

(a) ऋण सेवा क्षेत्र अनुपात (DSCR) : वर्तमान ब्याज और किस्तों को बंद करने की फर्म की क्षमता का मूल्यांकन करने के लिए उधारकर्ता ऋण सेवा कवरेज में दिलचस्पी रखते हैं।

$$\text{ऋण सेवा क्षेत्र अनुपात} = \frac{\text{ऋण सेवाओं के लिए उपलब्ध कमाई}}{\text{ब्याज + किस्तें}}$$

$$\text{ऋण सेवाओं के लिए कमाई*} = \text{शुद्ध लाभ (करों के बाद कमाई) + अवमूल्यन और अन्य परिशोधन जैसे गैर पूँजी परिचालन व्यय + ब्याज + अन्य समायोजन जैसे तय सम्पत्तियों की बिक्री पर नुकसान आदि}$$

* ब्याज और करों से पहले संचालन (या संचालन से नकद) से निधि को भी आवश्यकता के अनुसार माना जा सकता है।

व्याख्या (Interpretation)

आम तौर पर 1.5 से 2 का DSCR संतोषजनक है। आप यह ध्यान रख सकते हैं कि कभी-कभी दोनों अंश और भाजक पट्टा किराया में जोड़ा जा सकता है।

(b) ब्याज क्षेत्र अनुपात : इस अनुपात को "बार ब्याज अर्जित अनुपात" के रूप में भी जाना जाता है, यह इंगित करता है कि ब्याज (और अन्य निश्चित शुल्क) दायित्वों को पूरा करने की फर्म की क्षमता इस अनुपात को निम्न के रूप में गिना जाता है।

$$\text{ब्याज क्षेत्र अनुपात} = \frac{\text{ब्याज और करों से पहले कमाई (EBIT)}}{\text{ब्याज}}$$

व्याख्या (Interpretation)

ब्याज और करों से पहले कमाई इस अनुपात अंश में उपयोग की जाती है। क्योंकि ब्याज का भुगतान करने की क्षमता कर बोझ से प्रभावित नहीं है क्योंकि ऋण निधियों की ब्याज घटाई जाती है। यह अनुपात बताता है कि ब्याज के भुगतान के संबंध में फर्म को कोई शर्मिंदगी किए बिना किस आय की कमी हो

सकती है। एक उच्च ब्याज क्षेत्र अनुपात का मतलब है कि एक उद्यम आसानी से अपनी रुचि के दायित्वों को पूरा सकता है भले ही ब्याज और करों से पहले की आय में काफी गिरावट आई। एक कम अनुपात ऋण या अकुशल संचालन के अत्यधिक उपयोग को इंगित करता है।

(c) **अधिमान लाभांश क्षेत्र अनुपात** : यह अनुपात अधिमान शेयरों पर लाभांश का भुगतान करने के लिए एक फर्म की क्षमता को दर्शाता है जो कि वापसी के एक निर्धारित दर लेते हैं। इस अनुपात को निम्न के रूप में गिना जाता है।

$$\text{अधिमान लाभांश क्षेत्र अनुपात} = \frac{\text{शुद्ध लाभ/करों के बाद कमाई}}{\text{अधिमान लाभांश दायित्व}}$$

कर के बाद आय पर विचार किया जाता है क्योंकि ऋण के विपरीत, जिस पर फर्म के लाभ पर ब्याज लगाया जाता है, अधिमान लाभांश को लाभ की विनियोग माना जाता है।

व्याख्या (Interpretation)

यह अनुपात प्राथमिकता शेयरधारकों के लिए उपलब्ध सुरक्षा के मार्जिन को इंगित करता है। अधिमान शेयरधारकों के दृष्टिकोण से एक उच्च अनुपात वांछनीय है।

इसी तरह इक्विटी लाभांश क्षेत्र अनुपात को भी ध्यान में रखा जा सकता है। (EAT-अधिमान लाभांश) और इक्विटी निधि आँकड़े।

(d) **निश्चित प्रभार क्षेत्र अनुपात** : यह अनुपात दिखाता है कि ब्याज और करों से पहले नकदी प्रवाह कितनी बार तय वित्तपोषण के आरोपों को कवर करता है। यह अनुपात 1 से ज्यादा सुरक्षित माना जाता है।

$$\text{निश्चित प्रभार क्षेत्र अनुपात} = \frac{\text{EBIT} + \text{मूल्यह्रास}}{\text{ब्याज} + \frac{\text{ऋण का पुनर्भुगतान}}{1 - \text{कर दर}}}$$

अनुपातों की गणना के लिए नोट्स :

1. EBIT (ब्याज और करों से पहले कमाई) = PBT (ब्याज और करों से पहले लाभ)
EAT (करों के बाद कमाई) = PAT (करों के बाद लाभ),
EBT (करों से पहले कमाई) = PBT (करों से पहले लाभ)
2. अनुपात की आवश्यकता और उपलब्धता के आधार पर गणना की जाएगी और मूल सूत्रों से विचलित हो सकता है।
3. गणनाकर्ता को हर तरह के साथ पत्राचार में लिया जाना चाहिए और इसके विपरीत।

3.3.3 गतिविधि अनुपात/क्षमता अनुपात/प्रदर्शन अनुपात/कारोबार अनुपात (Activity Ratio/Efficiency Ratios/Performance Ratios/Turnover Ratios)

ये अनुपात कुशलता का मूल्यांकन करने के लिए कार्यरत हैं जिसके साथ फर्म अपनी सम्पत्ति का प्रबंधन करता है और इसका इस्तेमाल करता है। इस कारण से, उन्हें अक्सर 'सम्पत्ति प्रबंधन अनुपात'

कहा जाता है। ये अनुपात आमतौर पर अपनी परिसम्पत्तियों के संबंध में बिक्री की आवृत्ति दर्शाते हैं। ये सम्पत्तियाँ पूँजीगत सम्पत्ति या कार्यशील पूँजी या औसत इन्वेंट्री हो सकती हैं।

गतिविधि अनुपात / क्षमता अनुपात / प्रदर्शन अनुपात / कारोबार अनुपात :

- (a) कुल सम्पत्ति कारोबार अनुपात
- (b) निश्चित सम्पत्ति कारोबार अनुपात
- (c) पूँजी कारोबार अनुपात
- (d) चालू परिसम्पत्तियाँ कारोबार अनुपात
- (e) कार्यशील पूँजी कारोबार अनुपात :
 - (i) इन्वेंट्री स्टॉक कारोबार अनुपात
 - (ii) प्राप्त (लेनदार) कारोबार अनुपात
 - (iii) देय देनदार) कारोबार अनुपात।

इन अनुपातों की बिक्री आमतौर पर विक्रय / माल की लागत के संदर्भ में की जाती है और दर या समय के संदर्भ में व्यक्त की जाती है।

सम्पत्ति कारोबार अनुपात : नियोजित परिसम्पत्तियों की विभिन्न अवधारणाओं के आधार पर, इसे निम्नानुसार व्यक्त किया जा सकता है :

(a) कुल सम्पत्ति कारोबार अनुपात : यह अनुपात उस दक्षता को मापता है जिसके साथ फर्म अपनी कुल सम्पत्ति का उपयोग करता है। इस अनुपात को निम्न के रूप में गिना जाता है :

$$\text{कुल सम्पत्ति कारोबार अनुपात} = \frac{\text{बिक्री / बेचे गए माल की कीमत}}{\text{कुल सम्पत्ति}}$$

(b) निश्चित सम्पत्ति कारोबार अनुपात : यह उस दक्षता को मापता है जिसके साथ फर्म अपनी अंचल सम्पत्ति का उपयोग करता है।

$$\text{निश्चित सम्पत्ति कारोबार अनुपात} = \frac{\text{बिक्री / बेचे गए माल की कीमत}}{\text{निश्चित सम्पत्ति}}$$

व्याख्या (Interpretation)

एक उच्च अंचल परिसम्पत्तियों का कारोबार अनुपात बिक्री में अंचल सम्पत्तियों के कुशल उपयोग का संकेत देता है। एक फर्म जिसका संयंत्र और मशीनरी पुराने हैं फर्म की तुलना में अधिक अंचल सम्पत्ति कारोबार अनुपात दिखा सकते हैं जो हाल ही में उन्हें खरीदा है।

(c) पूँजी कारोबार अनुपात / शुद्ध सम्पत्ति कारोबार अनुपात :

$$\text{पूँजी कारोबार अनुपात} = \frac{\text{बिक्री / बेचे गए माल की कीमत}}{\text{शुद्ध सम्पत्ति}}$$

व्याख्या (Interpretation)

यह अनुपात दीर्घकालिक निवेश के प्रति रूप में बेचने वाली बिक्री/लागतों की बिक्री करने की फर्म की क्षमता को इंगित करता है। जितना अधिक अनुपात उतना अधिक कुशल मालिक और दीर्घकालिक लेनदारों के निधियों का उपयोग होता है। शुद्ध परिसम्पत्तियों में शुद्ध निश्चित परिसम्पत्तियाँ और शुद्ध वर्तमान परिसम्पत्तियों (वर्तमान परिसम्पत्तियाँ चालू देयताएँ) शामिल हैं। चूँकि शुद्ध परिसम्पत्तियों को नियोजित पूँजी के बराबर होता है इसलिए इसे कैपिटल टर्नओवर अनुपात के रूप में भी जाना जाता है।

(d) वर्तमान परिसम्पत्तियों कारोबार अनुपात : यह फर्म द्वारा मौजूदा संस्थाओं का उपयोग करते हुए दक्षता को मापता है :

$$\text{वर्तमान सम्पत्तियाँ कारोबार अनुपात} = \frac{\text{बिक्री/बेचे गए माल की कीमत}}{\text{वर्तमान सम्पत्ति}}$$

(e) कार्यशील पूँजी कारोबार अनुपात :

$$\text{कार्यशील पूँजी कारोबार अनुपात} = \frac{\text{बिक्री/बेचे गए माल की कीमत}}{\text{कार्यशील पूँजी}}$$

व्याख्या (Interpretation)

कार्यशील पूँजी कारोबार को इन्वेंट्री कारोबार, देनदार कारोबार, और लेनदार कारोबार में अलग किया जाता है।

नोट : कुल परिसम्पत्तियों/स्थिर परिसम्पत्तियों/वर्तमान परिसम्पत्तियों/शुद्ध परिसम्पत्तियों/कार्यशील व्यक्तियों की औसत/भी ली जा सकती है।

(i) इन्वेंट्री/स्टॉक कारोबार अनुपात : इस अनुपात को शेयर कारोबार अनुपात के रूप में भी जाना जाता है, वर्ष के दौरान बेचे जाने वाले माल की लागत और वर्ष के दौरान आयोजित औसत इन्वेंट्री के बीच संबंध स्थापित करता है। यह उस फफूंदी को मापता है जिसके साथ एक फर्म इसकी इन्वेंट्री का इस्तेमाल करता है या उसका प्रबंधन करता है। इस निम्नानुसार गणना की जाती है :

$$\text{इन्वेंट्री कारोबार अनुपात} = \frac{\text{बेचे गए माल की कीमत/बिक्री}}{\text{औसत इन्वेंट्री*}}$$

$$*\text{औसत इन्वेंट्री} = \frac{\text{प्रारंभिक स्टॉक} + \text{समापन स्टॉक}}{2}$$

कच्चे माल के इन्वेंट्री के मामले में इन्वेंट्री कारोबार अनुपात की गणना निम्न सूत्र का उपयोग कर की जाती है :

$$\text{कच्चा माल इन्वेंट्री कारोबार अनुपात} = \frac{\text{कच्चे माल की खपत}}{\text{औसत कच्चा माल स्टॉक}}$$

व्याख्या (Interpretation)

यह अनुपात इंगित करता है कि कितनी तेजी से इन्वेंट्री का उपयोग किया जाता है या बेचा जाता है। एक उच्च अनुपात तरलता के दृश्य बिंदु से अच्छा है और इसके विपरीत। कम अनुपात से पता चलता है कि इन्वेंट्री का उपयोग/बेचा/खोया नहीं गया है और एक अलमारी में या गोदाम में एक लंबे समय तक रहता है।

(ii) प्राप्तियाँ (देनदार) कारोबार अनुपात : यदि फर्म क्रेडिट पर सामान बेचता है, बिक्री राजस्व की प्राप्ति में देरी हो रही है और प्राप्त का निर्माण होता है नकद इन प्राप्तियों के बाद से महसूस किया जाता है।

जिस गति से इन प्राप्तियों को एकत्र किया जाता है वह फर्म की तरलता स्थिति को प्रभावित करता है। देनदार का कारोबार अनुपात फर्म के संग्रह और क्रेडिट नीतियों पर प्रकाश डालता है। यह दक्षता को मापता है कि प्रबंधन किसके खातों प्राप्य को प्रबंधित कर रहा है। इसकी निम्नानुसार गणना की जाती है :

$$\text{प्राप्तियाँ (देनदार) कारोबार अनुपात} = \frac{\text{उधार बिक्री}}{\text{औसत प्राप्ति बल खाते}}$$

प्राप्य (देनदार) वेग : देनदार का कारोबार अनुपात औसत संग्रह अवधि इंगित करता है हालांकि, औसत संग्रह अवधि सीधे इस प्रकार से गणना की जा सकती है :

$$\begin{aligned} \text{प्राप्य वेग/औसत वसूली अवधि} &= \frac{\text{औसत प्राप्य खाते}}{\text{औसत दैनिक उधार बिक्री}} \\ &\text{या} \\ &= \frac{12 \text{ महीने}/52 \text{ हफ्ते}/360 \text{ दिन}}{\text{प्राप्ति बल कारोबार अनुपात}} \end{aligned}$$

$$\text{औसत दैनिक उधार बिक्री} = \frac{\text{उधार बिक्री}}{\text{वर्ष में दिनों की संख्या (360 दिन)}}$$

व्याख्या (Interpretation)

औसत संग्रहण अवधि एक खाता प्राप्ति योग्यता प्राप्त करने के लिए की जाने वाली औसत संख्या को मापता है। इस अनुपात को प्राप्ति के दिनों की संख्या और प्राप्तियों में दिन की बिक्री की संख्या के रूप में भी जाना जाता है।

(iii) देय कारोबार अनुपात : इस अनुपात की गणना उसी लाइनों पर की जाती है क्योंकि प्राप्त कारोबार अनुपात की गणना की जाती है। यह अनुपात फर्म द्वारा भुगतान की गति को दर्शाता है। इसकी निम्नानुसार गणना की जाती है :

$$\text{देय कारोबार अनुपात} = \frac{\text{वार्षिक शुद्ध क्रेडिट खरीद}}{\text{औसत देय खाते}}$$

कम लेनदार का कारोबार अनुपात, आपूर्ति द्वारा दी गई उदार क्रेडिट शर्तों को दर्शाता है, जबकि एक उच्च अनुपात से पता चलता है कि खातों को तेजी से निपटारा है।

देय वेग/औसत भुगतान अवधि : का उपयोग करके गणना की जा सकती है :

$$\begin{aligned} &= \frac{\text{औसत देय खाते}}{\text{औसत दैनिक उधार खरीद}} \\ &\quad \text{या} \\ &= \frac{12 \text{ महीने} / 52 \text{ हफ्ते} / 360 \text{ दिन}}{\text{देय कारोबार अनुपात}} \end{aligned}$$

क्रेडिट नीति का निर्धारण करने में, देनदार का कारोबार और संग्रह अवधि एक अद्वितीय दिशानिर्देश प्रदान करती है।

व्याख्या (Interpretation)

फर्म यह तुलना कर सकता है, कि यह आपूर्तिकर्ताओं से प्राप्त क्रेडिट अवधि और ग्राहकों को क्या प्रदान करता है। साथ ही यह उद्योग में ग्राहकों की पेशकश की औसत क्रेडिट अवधि की तुलना कर सकता है, जिसमें यह संबंधित है।

उपर्युक्त तीन अनुपात यानी, इन्वेंट्री कारोबार अनुपात/प्राप्तिबल कारोबार अनुपात किसी संगठन की तरलता की जाँच के लिए भी प्रासंगिक है।

अनुपातों की गणना के लिए नोट्स :

- केवल विक्रय और वितरण खर्चों की बिक्री (COGS) और बिक्री लागत (COS) की अनुपस्थिति में अंतर, (COGS) बिक्री के बराबर होगा।
- हम लाभ की लागत को समाप्त करने वाले कारोबार अनुपातों की गणना के लिए बिक्री की लागत/बिक्री की लागत पर विचार कर सकते हैं।
- कुल परिसम्पत्तियों का औसत/स्थिर परिसम्पत्तियों/वर्तमान सम्पत्ति/शुद्ध सम्पत्ति/कार्यशील व्यक्ति/उपर्युक्त अनुपात की गणना में भी लिया जा सकता है। जब कुल सम्पत्ति शुद्ध परिसम्पत्तियों, पूँजी लगाए गए, शेयरधारकों के निधि आदि के औसत आँकड़े उपलब्ध हैं, तो यह जानकारी इस जानकारी का उपयोग करके अनुपात की गणना करने के लिए जा सकता है।
- अनुपात की आवश्यकता और उपलब्धता के आधार पर गणना की जाएगी और मूल सूत्रों से विचलित हो सकता है।

3.3.4 लाभप्रदता अनुपात (Profitability Ratios)

मुनाफे का अनुपात फर्म के मुनाफे या परिचालन क्षमता को मापता है। ये अनुपात व्यावसायिक परिचालन के अंतिम परिणाम दर्शाते हैं। वे कुछ सबसे करीब से देखे गए और व्यापक रूप से उद्धृत अनुपात हैं। फर्म लागत को अधिकतम करने के लिए इन अनुपातों को अधिकतम करने के लिए प्रबंधन के प्रयास।

फर्म का नतीजा उसकी आय के संदर्भ में सम्पत्ति या बिक्री या मालिक के हित आदि के दिए गए

स्तर के संदर्भ में मूल्यांकित किया जा सकता है। इसलिए मुनाफे अनुपात को विस्तार से चार श्रेणियों में वर्गीकृत किया जाता है।

- (i) बिक्री से संबंधित लाभप्रदता अनुपात
- (ii) निवेश पर समग्र वापसी से संबंधित लाभप्रदता अनुपात
- (iii) स्वामी के दृष्टिकोण से विश्लेषण के लिए अपेक्षित लाभप्रदता अनुपात
- (iv) बाजार/मूल्यांकन/निवेशक से संबंधित लाभप्रदता अनुपात।

लाभप्रदता अनुपात निम्नानुसार हैं :

1. बिक्री पर आधारित लाभप्रदता अनुपात
 - (a) सकल लाभ अनुपात
 - (b) शुद्ध लाभ अनुपात
 - (c) परिचालन लाभ अनुपात
 - (d) व्यय अनुपात
2. सम्पत्ति/निवेश पर समग्र वापसी से संबंधित लाभप्रदता अनुपात
 - (a) निवेश पर वापसी (ROI) :
 - (i) सम्पत्ति पर वापसी (ROA)
 - (ii) नियोजित पूँजी की वापसी (ROCE)
 - (iii) इक्विटी पर वापसी (ROE)
3. स्वामी के दृष्टिकोण से विश्लेषण के लिए अपेक्षित लाभप्रदता अनुपात
 - (a) प्रति शेयर आय (EPS)
 - (b) लाभांश प्रति शेयर (DPS)
 - (c) लाभांश भुगतान अनुपात (DP)
4. बाजार/मूल्यांकन/निवेशक से संबंधित लाभप्रदता अनुपात
 - (a) मूल्य आय (पी/ई) अनुपात
 - (b) लाभांश और कमाई प्राप्ति
 - (c) प्रति शेयर बाजार मूल्य/पुस्तक मूल्य (MV/BV)
 - (d) Q अनुपात

3.3.4.1 बिक्री पर आधारित लाभप्रदता अनुपात (Profitability Ratios Based on Sales)

(a) सकल लाभ (GP) अनुपात/सकल लाभ मार्जिन : यह बेचा सामानों के भुगतान के बाद प्रत्येक बिक्री का प्रतिशत रूप में शेष है।

$$\text{सकल लाभ अनुपात} = \frac{\text{सकल लाभ}}{\text{बिक्री}} \times 100$$

व्याख्या (Interpretation)

सकल लाभ मार्जिन मूल्य/बिक्री, मात्रा और लागत के बीच संबंधों पर निर्भर करता है। एक उच्च सकल लाभ मार्जिन अच्छा प्रबंधन का अनुकूल संकेत है।

(b) शुद्ध लाभ अनुपात/शुद्ध लाभ मार्जिन : यह शुद्ध लाभ और व्यापार की बिक्री के बीच के संबंध को मापता है। शुद्ध की अवधारणा के आधार पर यह गणना की जा सकती है :

$$\begin{aligned} \text{(i) शुद्ध लाभ अनुपात} &= \frac{\text{शुद्ध लाभ}}{\text{बिक्री}} \times 100 \\ &\text{या} \\ &= \frac{\text{कर के बाद कमाई (EBT)}}{\text{बिक्री}} \times 100 \end{aligned}$$

$$\text{(ii) पूर्व-कर मुनाफा अनुपात} = \frac{\text{करों से पहले कमाई}}{\text{बिक्री}} \times 100$$

व्याख्या (Interpretation)

शुद्ध लाभ अनुपात राजस्व का अनुपात पाता है जो मुनाफे में अपना मार्ग खोजता है। एक उच्च शुद्ध लाभ अनुपात व्यवसाय की सकारात्मक वापसी सुनिश्चित करेगा।

(c) परिचालन लाभ अनुपात : परिचालन लाभ अनुपात की व्यवसाय के परिचालन प्रदर्शन का मूल्यांकन करने के लिए गणना की जाती है :

$$\begin{aligned} \text{परिचालन लाभ का अनुपात} &= \frac{\text{परिचालन लाभ}}{\text{बिक्री}} \times 100 \\ &\text{या} \\ &= \frac{\text{करों व ब्याज से पहले कमाई (EBIT)}}{\text{बिक्री}} \times 100 \end{aligned}$$

जहाँ,

परिचालन लाभ = विक्रय – बेची गई वस्तुओं की बिक्री लागत (COGS) – व्यय

व्याख्या (Interpretation)

परिचालन लाभ अनुपात प्रत्येक बिक्री का प्रतिशत रूप में ब्याज और करों को छोड़कर सभी लागतों और खर्चों के भुगतान के बाद रहता है। यह अनुपात विश्लेषकों द्वारा बारीकी से किया जाता है क्योंकि यह परिचालन परिणाम पर केन्द्रित है। परिचालन लाभ अक्सर ब्याज और करों या ईबीआईटी से पहले आय के रूप में जाना जाता है।

(d) व्यय अनुपात : खर्चों की विभिन्न अवधारणाओं के आधार पर इसे अलग-अलग रूपों में व्यक्त किया जा सकता है :

$$(i) \text{ बेचे गए माल की लागत अनुपात} = \frac{\text{COGS}}{\text{बिक्री}} \times 100$$

$$(ii) \text{ परिचालन व्यय अनुपात} = \frac{\text{प्रशासनिक व्यय} + \text{बिक्री और वितरण अतिरिक्त}}{\text{बिक्री}} \times 100$$

$$(iii) \text{ परिचालन अनुपात} = \frac{\text{COGS} + \text{परिचालन व्यय}}{\text{बिक्री}} \times 100$$

$$(iv) \text{ वित्तीय व्यय अनुपात} = \frac{\text{वित्तीय व्यय*}}{\text{बिक्री}} \times 100$$

* इसमें करों, चोरी की वजह से नुकसान, आग से नष्ट हुए सामान आदि शामिल नहीं हैं।

प्रशासन व्यय अनुपात, बेचना और वितरण व्यय अनुपात भी इसी तरह से गणना की जा सकती है।

3.3.4.2 अस्तियों/निवेश पर समग्र वापसी से संबंधित लाभप्रदता अनुपात (Profitability Ratios related to Overall Return on Assets/Investments)

(a) निवेश पर लाभ (ROI) : ROI सभी को सबसे महत्वपूर्ण अनुपात है यह अपने मालिकों द्वारा व्यवसाय में निवेश किए गए निधियों पर लौटने का प्रतिशत है। संक्षेप में, यह अनुपात मालिक को बताता है कि व्यवसाय में जो भी प्रयास किए गए हैं, वह उतना ही फायदेमंद था। यह कम्पनी में निवेश के साथ आय/वापसी/लाभ की तुलना करती है। ROI की गणना निम्नानुसार है :

$$\begin{aligned} \text{निवेश पर वापसी} &= \frac{\text{वापसी/लाभ/कमाई}}{\text{निवेश}} \times 100 \\ &\text{या} \\ &= \frac{\text{वापसी/लाभ/कमाई}}{\text{बिक्री}} \times \frac{\text{बिक्री}}{\text{निवेश}} \end{aligned}$$

$$\frac{\text{वापसी/लाभ/कमाई}}{\text{बिक्री}} = \text{लाभप्रदता अनुपात}$$

$$(i) \text{ निवेश कारोबार अनुपात} = \frac{\text{बिक्री}}{\text{निवेश}}$$

तो, ROI = लाभप्रदता अनुपात × निवेश कारोबार अनुपात। लाभप्रदता अनुपात या निवेश कारोबार अनुपात में सुधार या दोनों के द्वारा या तो सुधार कर सकते हैं।

निवेश की अवधारणा बदलती है, और तदनुसार ROI की तीन व्यापक श्रेणियाँ हैं यानी :

- (i) सम्पत्ति पर वापसी (ROA),
- (ii) पूँजी नियोजित पर वापसी (ROCE) और
- (iii) इक्विटी पर वापसी (ROE).

हमें यह ध्यान रखना चाहिए कि निवेश कुल परिसम्पत्तियाँ या शुद्ध सम्पत्ति हो सकती है। शुद्ध परिसम्पत्तियों में नियोजित अतिरिक्त निधियों को भी नियोजित पूँजी के रूप में जाना जाता है जो कि शुद्ध योग्य प्लस ऋण से कुछ भी नहीं है। जहाँ शुद्ध योग्य इक्विटी शेयरधारकों के निधि है इसी तरह, वापसी/आय/मुनाफे की अवधारणा की आवश्यकता और जानकारी की उपलब्धता के अनुसार भिन्न हो सकती है।

(i) सम्पत्ति पर वापसी (ROA) : मुनाफे का अनुपात उस मुनाफे को हासिल करने के लिए नियोजित शुद्ध लाभ और परिसम्पत्तियों के बीच संबंध के संदर्भ में मापा जाता है। यह अनुपात फर्म में नियोजित परिसम्पत्तियों के मामले में फर्म की लाभप्रदता को मापता है। शुद्ध लाभ वापसी और परिसम्पत्तियों की विभिन्न अवधारणाओं के आधार पर (ROA) को निम्नानुसार मापा जा सकता है :

$$ROA = \frac{\text{करों के बाद शुद्ध लाभ}}{\text{औसत कुल सम्पत्ति}} \text{ या } \frac{\text{करों के बाद शुद्ध लाभ}}{\text{औसत मूर्त सम्पत्ति}} \text{ या } \frac{\text{करों के बाद शुद्ध लाभ}}{\text{औसत निश्चित सम्पत्ति}}$$

यहाँ लाभ में ब्याज का शुद्ध लाभ है। जैसा कि सम्पत्ति को भी उधारदाताओं द्वारा वित्त पोषण किया जाता है, इसलिए ROA की इस प्रकार की गणना की जाती है :

$$= \frac{\text{करों के बाद शुद्ध लाभ} + \text{ब्याज}}{\text{औसत कुल सम्पत्ति} / \text{औसत मूर्त सम्पत्ति} / \text{औसत निश्चित सम्पत्ति}}$$

या

$$\frac{\text{EBIT (1-T)}}{\text{औसत कुल सम्पत्ति}} \text{ कुल सम्पत्ति पर वापसी के रूप में भी जाना जाता है (ROTA)}$$

या

$$\frac{\text{EBIT (1-T)}}{\text{औसत के सम्पत्ति}} \text{ शुद्ध सम्पत्ति पर वापसी के रूप में भी जाना जाता है (RONA)}$$

(ii) पूँजी नियोजित पर वापसी (ROCE) : यह ROCE की एक और भिन्नता है जिसकी निम्नानुसार गणना की जाती है :

$$ROCE \text{ (पूर्व कर)} = \frac{\text{करों व ब्याज से पहले कमाई (EBIT)}}{\text{पूँजी नियोजन}} \times 100$$

$$ROCE \text{ (पूर्व कर)} = \frac{\text{EBIT (1-T)}}{\text{पूँजी नियोजन}} \times 100$$

कभी-कभी इसकी गणना ऐसे भी की जाती है।

$$= \frac{\text{करों के बाद शुद्ध लाभ (PAT/EAT) + ब्याज}}{\text{पूँजी नियोजन}} \times 100$$

जहाँ,

$$\begin{aligned} \text{नियोजित पूँजी} &= \text{कुल सम्पत्ति} - \text{वर्तमान देनदारियों, या} \\ &= \text{निश्चित सम्पत्ति} + \text{कार्यशील पूँजी} \end{aligned}$$

ROCE हमेशा उस दर से अधिक होनी चाहिए, जिस पर कम्पनी ने ऋण लिया।

अमूर्त सम्पत्ति (सम्पत्ति जो सद्भावना, अधिकार पत्र और व्यापार चिन्ह जैसी कोई अस्तित्व नहीं है) को नियोजित पूँजी में शामिल किया जाना चाहिए। लेकिन पूँजी में कोई फर्जी सम्पत्ति शामिल नहीं की जानी चाहिए। यदि जानकारी उपलब्ध है, तो नियोजित औसत पूँजी ली जाएगी।

(iii) इक्विटी पर वापसी (ROE) : इक्विटी पर वापसी फर्म में निवेश इक्विटी निधियों की लाभप्रदता है यह अनुपात बताता है कि फर्म द्वारा स्वामियों के निधि का लाभ कैसे उपयोग किया जाता है यह इक्विटी शेयरधारकों के लिए उत्पन्न प्रतिशत वापसी का भी उपाय करता है। इन अनुपात को निम्न के रूप में गिना जाता है :

$$\text{ROE} = \frac{\text{करों के बाद शुद्ध लाभ} - \text{अधिमान लाभांश (अगर हो)}}{\frac{\text{शुद्ध आय}}{\text{इक्विटी शेयरधारकों की निधि}}} \times 100$$

इक्विटी पर वापसी फर्म की लाभप्रदता और संभावित वृद्धि के सबसे महत्वपूर्ण संकेतकों में से एक है। जिन कम्पनियों में इक्विटी पर कम या कोई ऋण नहीं होता है, वे बड़ी पूँजी व्यय के बिना बढ़ने में सक्षम होते हैं, जिससे व्यापार के मालिकों को नकद वापस लेने और इसे कहीं और पुनर्निवेश करने की अनुमति मिलती है। कई निवेशक यह महसूस करने में विफल होते हैं कि दो कम्पनियों की इक्विटी पर एक ही वापसी हो सकती है, फिर भी कोई भी बेहतर व्यवसाय हो सकता है। यदि कुल शेयरधारकों पर वापसी की गणना की जाती है तो करों के बाद शुद्ध लाभ अधिमान लाभांश से पहले को कुल शेयरधारकों द्वारा विभाजित किया जाएगा, जिसमें प्राथमिकता शेयर पूँजी शामिल है।

ड्यूपॉन्ट मॉडल का उपयोग करते हुए इक्विटी पर वापसी : E.I में एक वित्त कार्यकारी विलमिंग्टन, डेलावेयर के ड्यूपॉन्ट डे नेमर्स एंड कम्पनी, ने 1919 में ड्यूपॉन्ट सिस्टम का वित्तीय विश्लेषण किया। यह प्रणाली दुनिया भर में इस्तेमाल की जाती है और इक्विटी पर वापसी लेने वाले घटकों के आधार के रूप में कार्य करती है।

परम्परागत ड्यूपॉन्ट मॉडल शुद्ध लाभ मार्जिन, सम्पत्ति कारोबार और इक्विटी गुणक का उपयोग करते हुए इक्विटी पर लौटने की गणना में कई घटक हैं। व्यक्तिगत रूप से प्रत्येक इनपुट का परीक्षण करके, इक्विटी पर कम्पनी की वापसी के स्रोतों की खोज की जा सकती है और इसके प्रतिस्पर्द्धियों से तुलना की जाती है।

(i) लाभप्रदता/शुद्ध लाभ मार्जिन : शुद्ध लाभ मार्जिन केवल बाद के लाभ के मुकाबले एक कम्पनी है जो प्रत्येक रुपये के राजस्व के लिए उत्पन्न करता है। शुद्ध लाभ मार्जिन उद्योगों में भिन्न होता है, जिससे इसके प्रतियोगियों के खिलाफ संभावित निवेश की तुलना करना महत्वपूर्ण होता

है यद्यपि सामान्य नियम का अंग है कि एक उच्च शुद्ध लाभ मार्जिन बेहतर है, प्रबंधन के लिए उच्चतर बिक्री को आकर्षित करने के लिए जानबूझकर शुद्ध लाभ मार्जिन को कम करने के लिए यह असामान्य नहीं है।

$$\frac{\text{लाभप्रदता}}{\text{शुद्ध लाभ मार्जिन}} = \frac{\text{लाभ}}{\text{शुद्ध आय}} \div \frac{\text{बिक्री}}{\text{राजस्व}}$$

शुद्ध लाभ मार्जिन एक सुरक्षा कुशन है, कम मार्जिन त्रुटि के लिए कम स्थान 1% मार्जिन वाले व्यापार में दोषपूर्ण निष्पादन के लिए कोई स्थान नहीं है। प्रबंधन के हिस्से पर छोटे गलत अनुमानों में बहुत कम या कोई चेतावनी नहीं होने के कारण भारी नुकसान हो सकता है।

(ii) निवेश कारोबार/परिसम्पत्ति का कारोबार/पूँजी कारोबार : परिसम्पत्ति का कारोबार अनुपात कितना प्रभावी रूप से एक कम्पनी अपनी सम्पत्ति को बिक्री में परिवर्तित कर देता है। इसकी निम्नानुसार गणना की जाती है :

$$\text{निवेश कारोबार/परिसम्पत्ति कारोबार/पूँजी कारोबार} \\ = \text{बिक्री/राजस्व} \div \text{निवेश/सम्पत्ति/पूँजी}$$

परिसम्पत्ति कारोबार अनुपात में शुद्ध लाभ मार्जिन से व्युत्क्रम होता है, अर्थात् शुद्ध लाभ मार्जिन अधिक है, परिसम्पत्ति का कारोबार कम है। परिणाम यह है कि निवेशक विभिन्न सिद्धान्त (कम लाभ, उच्च मात्रा बनाम उच्च-लाभ, कम मात्रा) का उपयोग करके कम्पनियों की तुलना कर सकता है और निर्धारित कर सकता है कि कौन सा अधिक आकर्षक व्यवसाय है।

(iii) इक्विटी गुणक : एक ऐसी कम्पनी के लिए संभव है जो भयानक बिक्री और मार्जिन के साथ अत्यधिक ऋण लेते हैं और इक्विटी पर अपने वापसी में कृत्रिम रूप से वृद्धि करते हैं। इक्विटी गुणक, वित्तीय लाभ उठाने का एक उपाय, निवेशक को यह देखने की अनुमति देता है कि इक्विटी पर वापसी का कोई हिस्सा कारण का नतीजा है। इक्विटी गुणक की गणना निम्नानुसार की जाती है :

$$\text{इक्विटी गुणक} = \text{निवेश/सम्पत्ति/पूँजी} \div \text{शेयरधारकों की इक्विटी}$$

इक्विटी पर वापसी की गणना : ड्यूपॉन्ट सिद्धान्त का उपयोग करते हुए इक्विटी पर वापसी की गणना करने के लिए, तीन घटकों (शुद्ध लाभ मार्जिन, परिसम्पत्ति कारोबार और इक्विटी गुणक) को गुणा करें।

$$\text{इक्विटी पर वापसी} = (\text{लाभप्रदता/शुद्ध लाभ मार्जिन}) (\text{निवेश कारोबार/सम्पत्ति कारोबार/पूँजी कारोबार}) (\text{इक्विटी गुणक})$$

उदाहरण : एक्सवाईजेड कम्पनी का विवरण निम्नानुसार है :

राजस्व ₹ 29,261; शुद्ध आय ₹ 4,212; सम्पत्ति: ₹ 27,987; शेयरधारकों की इक्विटी: ₹ 13,572
इक्विटी पर वापसी की गणना करें।

उपाय

शुद्ध लाभ मार्जिन = शुद्ध आय (₹ 4,212) ÷ राजस्व (₹ 29,261) = 0.14439, या 14.39%

सम्पत्ति कारोबार = आय (₹ 29,261) ÷ सम्पत्ति (27,987) = 1.0455

इक्विटी गुणक = सम्पत्ति (₹ 27,987) ÷ शेयरधारकों इक्विटी (₹ 13,572) = 2.0621

अंत में, हम इक्विटी पर वापसी की गणना करने के लिए तीन घटकों को एक साथ बढ़ाते हैं:

$$\begin{aligned} \text{इक्विटी या वापसी} &= \text{शुद्ध लाभ मार्जिन} \times \text{सम्पत्ति का कारोबार} \times \text{इक्विटी गुणक} \\ &= (0.1439) \times (1.0455) \times (2.0621) = 0.3102 \text{ या } 31.02\% \end{aligned}$$

विश्लेषण : इक्विटी पर 31.02% वापसी किसी भी उद्योग में अच्छा है। फिर भी, अगर आप इक्विटी गुणक को बाहर निकालना चाहते हैं तो यह देखने के लिए कि कितना कम्पनी कमाई करेगी, अगर यह पूरी तरह से ऋण मुक्त है, तो आप देखेंगे कि ROE 15.04% तक गिर जाएगा।

इक्विटी पर वापसी का 15.04% लाभ मार्जिन और बिक्री के कारण था, जबकि 15.96% कारोबार में काम पर ऋण पर अर्जित वापसी के कारण था। अगर आपको इक्विटी पर समान वापसी के साथ तुलनात्मक मूल्यांकन पर एक कम्पनी मिली है, तो आंतरिक रूप से उत्पन्न बिक्री से उँची प्रतिशत वृद्धि हुई है, यह अधिक आकर्षक होगा।

3.3.4.3 मालिक के दृष्टिकोण से विश्लेषण के लिए अपेक्षित लाभप्रदता अनुपात (Profitability Ratios Required for Analysis from Owner's Point of View)

(a) प्रति शेयर आय (EPS) : सामान्य शेयरधारकों के दृष्टिकोण से एक फर्म की लाभप्रदता इक्विटी शेयरों की संख्या के अनुसार मापी जा सकती है। यह प्रति शेयर कमाई के रूप में जाना जाता है। इसकी गणना निम्नानुसार की जाती है :

$$\text{प्रति शेयर कमाई (EPS)} = \frac{\text{इक्विटी शेयरधारकों के लिए उपलब्ध शुद्ध लाभ}}{\text{बकाया इक्विटी शेयरों की संख्या}}$$

(b) प्रति शेयर लाभांश (DPS) : उपर्युक्त कहा गया है कि प्रति शेयर आय प्रति शेयर फर्म की लाभप्रदता को दर्शाता है, या दर्शाता नहीं है कि लाभांश के रूप में कितना लाभ दिया जाता है और व्यापार द्वारा कितना बनाए रखा जाता है। लाभांश प्रति शेयर अनुपात इक्विटी शेयरधारकों को प्रति शेयर के मुकाबले लाभ की मात्रा दर्शाता है। इसकी इस रूप में गणना की जाती है :

$$\text{प्रति शेयर लाभांश (DPS)} = \frac{\text{इक्विटी शेयरधारकों को कुल लाभांश का भुगतान}}{\text{बकाया इक्विटी शेयरों की संख्या}}$$

(c) लाभांश भुगतान अनुपात (DP) : यह अनुपात शुद्ध कमाई के संबंध में दिए गए लाभांश को मापता है। यह देखने के लिए निर्धारित किया जाता है कि व्यवसाय के लिए प्रबंधन द्वारा प्रति शेयर कितनी कमाई रखी गई है। इसकी इस रूप में गणना की जाती है।

$$\text{लाभांश भुगतान अनुपात (DP)} = \frac{\text{प्रति इक्विटी शेयर लाभांश (DPS)}}{\text{प्रति शेयर कमाई (EPS)}}$$

3.3.4.4 बाजार/मूल्यांकन/निवेशकों से संबंधित लाभप्रदता अनुपात (Profitability Ratios related to market/Valuation/Investors)

इन अनुपातों के उपायों में शामिल हैं जो कम्पनी के शेयरों के बाजार मूल्य पर विचार करते हैं, जानकारी साझा करने के लिए अक्सर शेयर कीमतों के आँकड़ों लेखांकन आँकड़ों से छेड़छाड़ किए जाते

हैं। ये हैं (a) मूल्य-आय अनुपात, (b) लाभांश प्राप्ति, (c) बाजार मूल्य/शेयर मूल्य प्रति शेयर, (d) क्यू अनुपात।

(a) मूल्य-आय अनुपात (पी/ई अनुपात) : मूल्य आय अनुपात इक्विटी निवेशकों की उम्मीद से फर्म की आय के बारे में बताता है। यह आय को बाजार मूल्य से संबंधित है और इसे आमतौर पर निवेश जोखिम विशेषताओं, शेयरधारक अभिविन्यास, कॉर्पोरेट छवि और तरलता की डिग्री के विकास की संभावना के सारांश के रूप में लिया जाता है।

इसकी गणना इस रूप में है :

$$\text{प्रति शेयर मूल्य-आय अनुपात} = \frac{\text{प्रति शेयर बाजार मूल्य (MPS)}}{\text{प्रति शेयर कमाई (EPS)}}$$

व्याख्या (Interpretation)

यह निवेशकों या भावी निवेशकों के लिए लौटाने की अवधि को इंगित करता है।

(b) लाभांश और कमाई प्राप्ति :

$$\text{लाभांश प्राप्ति} = \frac{\text{लाभांश} \pm \text{शेयर की कीमत में बदलाव}}{\text{प्रारंभिक शेयर की कीमत}} \times 100$$

कभी-कभी इसकी गणना इस रूप में की जाती है :

$$\frac{\text{प्रति शेयर लाभांश (DPS)}}{\text{प्रति शेयर बाजार मूल्य (MPS)}} \times 100$$

व्याख्या (Interpretation)

यह अनुपात निवेश पर वापसी का संकेत देता है, यह औसत निवेश या निवेश बंद होने पर हो सकता है। लाभांश (%) शेयरों के प्रदत्त लागत पर वापसी का संकेत देता है लेकिन उपज (%) सही वापसी का सूचक है जिससे शेयर पूँजी अपने बाजार मूल्य पर ली जाती है। अर्जित प्राप्ति की भी गणना के रूप में की जा सकती है।

$$\text{कमाई प्राप्ति} = \frac{\text{प्रति शेयर कमाई (EPS)}}{\text{प्रति शेयर बाजार मूल्य (MPS)}} \times 100$$

इसके अतिरिक्त कमाई मूल्य (ईपी) अनुपात के रूप में जाना जाता है।

(c) प्रति शेयर बाजार मूल्य/पुस्तक मूल्य (MVBV) : यह मूल्यांकन करता है, कि निवेशक कम्पनी के पिछले और भविष्य में प्रदर्शन को कैसे देखें :

$$\frac{\text{प्रति शेयर बाजार मूल्य}}{\text{प्रति शेयर पुस्तक मूल्य}} = \frac{\text{औसत शेयर की कीमत}}{\text{शुद्ध आय} \div \text{इक्विटी शेयरों की संख्या}}$$

या

$$\frac{\text{समापन शेयर की कीमत}}{\text{शुद्ध आय} \div \text{इक्विटी शेयरों की संख्या}}$$

व्याख्या (Interpretation)

यह अनुपात शेयरधारकों के निवेश की बाजार प्रतिक्रिया को इंगित करता है। निःसंदेह उच्चतर अनुपात वापसी और पूँजीगत लाभ के मामले में शेयरधारकों को स्थिति बेहतर है।

(d) क्यू अनुपात : यह अनुपात जेम्स टोबिन द्वारा प्रस्तावित किया गया है, एक अनुपात के रूप में परिभाषित किया गया है।

<p>इक्विटी और दायित्वों का बाजार मूल्य सम्पत्ति की अनुमानित प्रतिस्थापन लागत</p>

अनुपातों की गणना के लिए नोट्स :

1. EBI (ब्याज और करों से पहले कमाई) = PBT (ब्याज और करों से पहले लाभ)
 EAT (करों के बाद कमाई) = PAT (करों के बाद लाभ),
 EBT (करों से पहले कमाई) = PBT (करों से पहले लाभ),
2. अधिमान लाभांश की अनुपस्थिति में इक्विटी शेयरधारकों के लिए उपलब्ध आय के रूप में PAT को लिया जा सकता है।
3. यदि जानकारी उपलब्ध है तो नियोजित औसत पूँजी ROCE की गणना करते समय लिया जाएगा।
4. अनुपात की आवश्यकता और उपलब्धता के आधार पर गणना की जाएगी और वह मूल सूत्रों से विचलित हो सकती है।
5. गणनाकर्ता को हर तरह के साथ पत्राचार में लिया जाना चाहिए और उप-विपरीत।

3.4 वित्तीय विश्लेषण के प्रायोक्ता और उद्देश्य : एक सरसरी निगाह (Users and Objective of Financial Analysis : A Birds Eye View)

वित्तीय विवरण विश्लेषण फर्म के बारे में ली गई जानकारी प्राप्त करने के विभिन्न शेयरधारकों के लिए उपयोगी है :

क्रम सं.	प्रायोक्ता	उद्देश्य	अनुपात सामान्य रूप से इस्तेमाल किया
1.	शेयरधारक	संगठन के मालिक होने के नाते वे संगठन की मुनाफे और विकास के बारे में जानना चाहते हैं।	<ul style="list-style-type: none"> ● मुख्य रूप से लाभप्रदता अनुपात [प्रति शेयर आय (EPS), आय लागत (P/F) लाभांश भुगतान अनुपात (DP)]
2.	निवेशक	वे संगठन में कुल वित्तीय स्वास्थ्य को व विशेष रूप से संगठनों के भविष्य के परिप्रेक्ष्य को जानना चाहते हैं।	<ul style="list-style-type: none"> ● लाभप्रदता अनुपात ● पूँजी संरचना अनुपात ● शोधन अनुपात ● कारोबार अनुपात

3.	उधारदाता	वे संगठन के लिए उधार रखे गए अपने धन के सुरक्षा के परिप्रेक्ष्य पर नजर रखेंगे।	<ul style="list-style-type: none"> ● क्षेत्र अनुपात ● शोधन अनुपात ● कारोबार अनुपात ● लाभप्रदाता अनुपात
4.	लेनदार	वे विशेष रूप से अल्पावधि संगठन की देयता स्थिति जानना चाहते हैं लेनदार यह जानना चाहेंगे कि क्या संगठन नियत तारीख पर राशि का भुगतान करने में सक्षम होगी।	<ul style="list-style-type: none"> ● तरलता अनुपात ● अल्पावधि शोधनक्षमता अनुपात / तरलता अनुपात
5.	कर्मचारी	वे संगठन के समग्र वित्तीय धन को जानना चाहते हैं और इसकी तुलना प्रतिस्पर्द्धी कम्पनी के साथ करते हैं।	<ul style="list-style-type: none"> ● तरलता अनुपात ● दीर्घकालिक शोधन क्षमता अनुपात ● लाभप्रदाता अनुपात ● निवेश पर वापसी
6.	नियंत्रक/सरकार	वे सरकार को देय कराधान और अन्य विवरणों को निर्धारित करने के लिए वित्तीय विवरणों का विश्लेषण करेंगे।	<ul style="list-style-type: none"> ● लाभप्रदाता अनुपात
7.	प्रबन्धक		
(a)	उत्पादन प्रबंधक	वे इनपुट आउटपुट, उत्पादन मात्रा आदि के बारे में विभिन्न आँकड़े जानना चाहते हैं।	<ul style="list-style-type: none"> ● इनपुट आउटपुट अनुपात ● कच्चे माल की खपत
(b)	बिक्री प्रबंधक	विभिन्न वर्षों के लिए बिक्री की मात्रा से जुड़े आँकड़े, अन्य जुड़े आँकड़े और भविष्य की बिक्री का आँकड़ा उनके लिए ब्याज का क्षेत्रफल होगा।	<ul style="list-style-type: none"> ● कारोबार अनुपात (मूल्य रूप से प्राप्य कारोबार अनुपात) ● व्यय अनुपात
(c)	वित्तीय प्रबंधक	वे वित्तीय आवश्यकताओं की उनकी भविष्य की भविष्यवाणी के लिए विभिन्न अनुपात जानना चाहते हैं।	<ul style="list-style-type: none"> ● लाभप्रदाता अनुपात ● विशेष रूप से निवेश पर वापसी से संबंधित ● कारोबार अनुपात ● पूँजी संरचना अनुपात
(d)	प्रमुख अधिकारी/महाप्रबंधक	वे साथी के पूरे परिप्रेक्ष्य वित्त, बिक्री आविष्कार मानव संसाधन उत्पादन आदि से शुरू करने की कोशिश करेंगे।	<ul style="list-style-type: none"> ● सभी अनुपात

8.	विभिन्न उद्योग		
(a)	दूरसंचार		<ul style="list-style-type: none"> ● कॉल से संबंधित अनुपात ● प्रति ग्राहक आय और व्यय
(b)	बैंक	वित्त/प्रबंधक/विश्लेषक उनकी कम्पनी के अनुपात की गणना करेंगे और इसकी तुलना उद्योग मानदंडों से करेंगे।	<ul style="list-style-type: none"> ● रकम जमा करने के लिए ऋण ● परिचालन खर्च और आय अनुपात ● कमरा अधिभोग अनुपात ● बेड़ अधिभोग अनुपात
(c)	होटल		<ul style="list-style-type: none"> ● यात्री किलोमीटर ● परिचालन लागत-प्रति यात्री किलोमीटर

3.5 वित्तीय निर्णय लेने में अनुपात विश्लेषण के आवेदन (Application of Ratio Analysis in Financial Decision Making)

एक व्यावसायिक चिंता का प्रदर्शन विश्लेषण करने की एक लोकप्रिय तकनीक वित्तीय अनुपात विश्लेषण का है। वित्तीय प्रबंधन के एक उपकरण के रूप में, वे महत्वपूर्ण महत्व के हैं।

अनुपात विश्लेषण का महत्व इस तथ्य में निहित है कि एक तुलनात्मक आधार पर तथ्यों को प्रस्तुत करता है और एक फर्म के प्रदर्शन के संबंध में संदर्भों को आकर्षित करने में सक्षम बनाता है। अनुपात विश्लेषण निम्नलिखित पहलुओं के संबंध में एक फर्म के प्रदर्शन का आकलन करने में प्रासंगिक है :

3.5.1 प्रदर्शन का मूल्यांकन करने के लिए वित्तीय अनुपात (Financial Ratios for Evaluating Performance)

(a) तरलता की स्थिति : अनुपात विश्लेषण की मदद से कोई फर्म की तरलता स्थिति के बारे में निष्कर्ष निकाल सकता है। एक फर्म की तरलता की स्थिति संतोषजनक होगी, जब वह अपने दायित्वों को पूरा करने में सक्षम होती है, जब वे बन जाते हैं यह क्षमता एक फर्म के तरलता अनुपात में परिलक्षित होती है। नकदी अनुपात विशेष रूप से बैंकों और अल्पकालिक ऋण के अन्य आपूर्तिकर्ताओं द्वारा क्रेडिट विश्लेषण में उपयोगी होते हैं।

(b) दीर्घकालिक शोधन : अनुपात विश्लेषण एक फर्म की दीर्घकालिक वित्तीय व्यवहार्यता का आकलन करने के लिए उतना ही उपयोगी है। उधारकर्ता की वित्तीय स्थिति का यह पहलू दीर्घकालिक लेनदारों, सुरक्षा विश्लेषक और किसी व्यवसाय के वर्तमान और संभावित मालिकों के लिए चिंता का विषय है। दीर्घावधि शोधन क्षमता उत्तोलन/पूँजी ढाँचे और लाभप्रदता अनुपातों द्वारा मापा जाता है जो कि शक्ति और संचालन दक्षता पर ध्यान केन्द्रित करते हैं। उदाहरण के लिए, उत्तोलक अनुपात, यह इंगित करेगा कि क्या किसी फर्म के पास वित्त के विभिन्न स्रोतों का उचित अनुपात है या फिर ऋण के साथ भार डाला गया है, इस मामले में इसकी शोधन क्षमता गंभीर तनाव के संपर्क में है।

इसी तरह, विभिन्न लाभप्रदता अनुपात यह दिखाएंगे कि फर्म उसके मालिकों को पर्याप्त जोखिम प्रदान करने में सक्षम है या नहीं

(c) परिचालन क्षमता : अनुपात विश्लेषण अपनी परिसम्पत्तियों के प्रबंधन और उपयोग में दक्षता की डिग्री पर प्रकाश डालता है।

विभिन्न गतिविधि अनुपात इस तरह के परिचालन प्रभाविता को मापते हैं। वास्तव में, एक फर्म की शोधनुमा, अंतिम विश्लेषण में, कुल सम्पत्ति के साथ-साथ इसके घटकों के उपयोग से उत्पन्न बिक्री राजस्व पर निर्भर है।

(d) सम्पूर्ण लाभप्रदता: बाहरी कम्पनियों के विपरीत, जो एक फर्म की वित्तीय स्थिति के एक पहलू में रुचि रखते हैं, प्रबन्धन हमेशा उद्यम की सम्पूर्ण लाभप्रदता के बारे में चिंतित है। यही है, वे अपने मालिकों को उचित वापसी सुनिश्चित करने और फर्म की परिसम्पत्तियों का इष्टतम उपयोग सुनिश्चित करने के लिए, अपने लेनदारों को अपने अल्पकालिक और दीर्घकालिक दायित्वों को पूरा करने के लिए फर्म की क्षमता के बारे में चिंतित हैं। यह संभव है यदि एकीकृत दृश्य लिया जाता है और सभी अनुपातों को एक साथ माना जाता है।

(e) अंतर फर्म तुलना : अनुपात विश्लेषण न केवल एक फर्म की वित्तीय स्थिति पर प्रकाश डालता है बल्कि यह उपचार उपायों के लिए एक कदम पत्थर के रूप में भी कार्य करता है। यह अंतर-फर्म तुलना उद्योग औसत के साथ तुलना के कारण संभव है। विशिष्ट अनुपात एक भी आँकड़ा अर्थहीन है, जब तक कि यह कुछ मानक या आदर्श से संबंधित नहीं है एक लोकप्रिय तकनीक उद्योग की औसत के साथ एक फर्म के अनुपात की तुलना करना है। यह अपेक्षा से अपेक्षा की जानी चाहिए कि एक फर्म का प्रदर्शन उस उद्योग के व्यापक अनुरूप होना चाहिए यह संबंधित है।

एक अंतर-फर्म की तुलना उसके प्रतिद्वंद्वियों के मुकाबले रिश्तेदार स्थिति प्रदर्शित करेगी। यदि परिणाम या तो उद्योग की औसत या प्रतिद्वंद्वियों के साथ विचलन में हैं, तो फर्म संभावित कारणों की पहचान करने की कोशिश कर सकता है, और प्रकाश में उपचारात्मक उपायों को ले सकता है।

अनुपात ने केवल ऑपरेशन के पोस्टमार्टम का प्रदर्शन करता है, बल्कि भविष्य के लिए बैरोमीटर के रूप में भी काम करता है। अनुपात का अनुमानक मूल्य है और भविष्य के लिए व्यावसायिक गतिविधियों की भविष्यवाणी और नियोजन में वे बहुत सहायक हैं। यह बजट में मदद करता है।

निष्कर्ष अनुपात विश्लेषण का उपयोग करके प्राप्त विश्लेषण के आधार पर तैयार किए गए हैं। प्रभावित फैसलों में किसी चिंता के सामान पर माल की आपूर्ति हो सकती है, चाहे बैंक ऋण उपलब्ध कराया जाए, आदि।

(f) बजट के लिए वित्तीय अनुपात : इस क्षेत्र के अनुपात में बहुत अधिक सहायता प्रदान करने में सक्षम हैं, बजट केवल पिछले अनुभव के आधार पर भविष्य की गतिविधि का अनुमान है, जिससे कि विभिन्न गतिविधियों के बीच संबंध अनमोल है।

वित्तीय अनुपात का उपयोग करते हुए बजट आँकड़ों का अनुमान लगाने के लिए आमतौर पर संभव है। अनुमानित अनुमानों के साथ वास्तविक प्रदर्शन को मापने के लिए अनुपात का भी उपयोग किया जा सकता है। वे दिशा निर्देशों का संकेत देते हैं जिसमें बजट में या प्रदर्शन में समायोजन किए जाने चाहिए ताकि उन्हें एक दूसरे के करीब लाया जा सके।

3.6 वित्तीय राशियों की सीमाएँ (Limitations of Financial Ratios)

वित्तीय अनुपात की सीमाएँ नीचे दी गई हैं :

(i) विविध उत्पाद लाइन : कई व्यवसाय बहुत अलग उद्योगों में बड़ी संख्या में प्रभाग संचालित करते हैं। ऐसे मामलों में कुल आँकड़ों के आधार पर गणना किए गए अनुमान अंतर-फर्म की तुलना के लिए इस्तेमाल नहीं किया जा सकता।

(ii) वित्तीय आँकड़े मुद्रास्फीति से बुरी तरह विकृत हैं : ऐतिहासिक मूल्य मान सही मूल्यों से

काफी भिन्न हो सकते हैं। वित्तीय आँकड़ों के ऐसे विकृतियों को वित्तीय अनुपात में किया जाता है।

(iii) मौसमी कारक वित्तीय डेटा को भी प्रभावित कर सकते हैं।

उदाहरण : एक कम्पनी ग्रीष्मकालीन वस्त्रों में सौदा करती है। यह हर वर्ष अक्टूबर से जनवरी के दौरान एक उच्च सूची रखता है। शेष वर्ष के लिए इसके इक्विटी स्तर केवल मौसमी इन्वेन्ट्री स्तर का 1/4 था।

इसलिए तरलता अनुपात और इन्वेन्ट्री अनुपात पक्षपाती तस्वीर उत्पन्न करेगा। वर्ष के अंत तस्वीर व्यवसाय की औसत तस्वीर नहीं हो सकती है। कभी-कभी मौसमी कारकों को खत्म करने के लिए वार्षिक आँकड़ों के बजाय मासिक औसत इन्वेन्ट्री आँकड़ों को लेने का सुझाव दिया जाता है लेकिन बाह्य उपयोगकर्ताओं के लिए मासिक इन्वेन्ट्री आँकड़े प्राप्त करना मुश्किल है (यहाँ तक कि मामलों में मासिक इन्वेन्ट्री आँकड़े उपलब्ध नहीं हो सकते हैं।)

(iv) लोकप्रिय रूप में उपयोग किए गए वित्तीय अनुपात (जैसे वर्तमान अनुपात, ऋण-इक्विटी अनुपात, आदि) के लिए एक अच्छा आकार देने के लिए : व्यवसाय कुछ वर्ष के अंत में समायोजन कर सकता है। ऐसी विंडो ड्रेसिंग में वित्तीय अनुपात के चरित्र को बदलना पड़ सकता है जो अलग होगा, ऐसा कोई परिवर्तन नहीं किया गया था।

(v) लेखांकन नीतियों और लेखा अवधि में अंतर : यह दो कम्पनियों के लेखांकन आँकड़ों को तुलनीय कर सकता है और लेखा अनुपात भी कर सकता है।

(vi) अनुपात का कोई मानक निश्चित नहीं है कि जिसके खिलाफ फर्म के अनुपात की तुलना की जा सकती है : कभी-कभी एक फर्म के अनुपात की तुलना उद्योग औसत से होती है। लेकिन अगर एक फर्म औसत से ऊपर होना चाहता है, तो उद्योग का औसत कम मानक बन जाता है।

दूसरी ओर, नीचे औसत फर्म के लिए, उद्योग औसत को प्राप्त करने के लिए एक मानक बहुत अधिक हो जाता है।

(vii) यह स्पष्ट करना बहुत मुश्किल है कि क्या कोई खास अनुपात अच्छा या बुरा है : उदाहरण के लिए, कम मौजूदा अनुपात को कम तरलता से दृष्टिकोण से बुरा कहा जा सकता है, लेकिन एक उच्च वर्तमान अनुपात 'अच्छा' के रूप में इस अनधिकृत कार्यशील पूँजी प्रबंधन से हो सकता है।

(viii) वित्तीय अनुपात अंतर से संबंधित हैं, स्वतंत्र नहीं हैं : अलगाव में देखा गया एक अनुपात क्षमता को उजागर कर सकता है। लेकिन जब उन्हें अनुपात का एक सेट माना जाता है तो वे अलग-अलग बोल सकते हैं। अनुपात के बीच इस तरह के परस्पर निर्भरता को बहुभिन्नरूपी विश्लेषण के माध्यम से ध्यान रखा जा सकता है।

वित्तीय अनुपात सुराग प्रदान करते हैं लेकिन निष्कर्ष नहीं। ये केवल विशेषज्ञों के हाथ में उपकरण हैं, क्योंकि वित्तीय अनुपातों की कोई मानक तैयार व्याख्या नहीं है।

3.7 वित्तीय विश्लेषण (Financial Analysis)

यह दो प्रकार का होता है : क्षैतिज और ऊर्ध्वाधर :

क्षैतिज विश्लेषण : जब एक वर्ष के वित्तीय विवरण का विश्लेषण किया जाता है और दूसरे वर्ष या वर्षों की तुलना करने के बाद इसकी व्याख्या की जाती है, तो इसे क्षैतिज के रूप में जाना जाता है। यह एक ही समय अवधि में वित्तीय जानकारी से प्राप्त अनुपात पर आधारित हो सकता है।

ऊर्ध्वाधर विश्लेषण : जब एक वर्ष के वित्तीय विवरण का विश्लेषण किया जाता है तो इसे ऊर्ध्वाधर

विश्लेषण कहा जाता है। यह विश्लेषण अंतर फर्म की तुलना में उपयोगी है। लाभ और हानि खाते की हर वस्तु सकल बिक्री का एक प्रतिशत के रूप में व्यक्त की जाती है, जबकि आर्थिक चिट्ठा पर प्रत्येक आइटम फर्म द्वारा आयोजित कुल सम्पत्ति का प्रतिशत के रूप में व्यक्त किया जाता है।

3.8 अनुपातों का सारांश (Summary of Ratios)

अनुपात को वर्गीकृत करने का दूसरा तरीका आपको एक सारणी के रूप में दिखाया गया है। अनुपात का सारांश नीचे दिया गया है :

अनुपात	सूत्र	व्याख्या
तरलता अनुपात		
वर्तमान अनुपात	$\frac{\text{वर्तमान सम्पत्ति}}{\text{वर्तमान दायित्व}}$	यह एक साधारण उपाय है, जो अनुमान लगाता है कि व्यवसाय अल्पावधि ऋण का सामना कर सकता है या नहीं।
त्वरित अनुपात	$\frac{\text{त्वरित सम्पत्ति}}{\text{वर्तमान दायित्व}}$	यह वर्तमान ऋण का तुरन्त पूरा करने की क्षमता को मापता है आदर्श अनुपात 1 है।
नकदी अनुपात	$\frac{(\text{नकद और बैंक बलेंस} + \text{बिक्री योग्य प्रतिभूतियाँ})}{\text{वर्तमान दायित्व}}$	यह व्यापार की सम्पूर्ण तरलता को मापता है।
यह व्यापार की सम्पूर्ण तरलता को मापता है	$\frac{(\text{नकद और बैंक बलेंस} + \text{बिक्री योग्य प्रतिभूतियाँ})}{\text{परिचालन व्यय} \div \text{दिनों की संख्या}}$	यह नियमित नकदी व्यय को पूरा करने के लिए व्यापार की क्षमता को मापता है।
शुद्ध कार्यशील पूँजी अनुपात	$\frac{\text{वर्तमान सम्पत्ति} - \text{वर्तमान दायित्व}}{\text{वर्तमान दायित्व}}$	यह वित्तीय रूप में बचने के लिए व्यवसाय की क्षमता निर्धारित करने के लिए नकदी प्रवाह का एक उपाय है।

पूँजी संरचना अनुपात

इक्विटी अनुपात	$\frac{\text{शेयरधारकों की इक्विटी}}{\text{नियोजित पूँजी}}$	यह निवेश कम्पनियों में कुल निधि में कम्पनियों के निधि को इंगित करता है।
ऋण अनुपात	$\frac{\text{कुल बाहरी दायित्व}}{\text{कुल दायित्व} + \text{शुद्ध आय}}$	यह बाहरी निधियों के उपयोग का एक संकेतक है।
शेयरपूँजी अनुपात को ऋण	$\frac{\text{कुल बाहरी दायित्व}}{\text{शेयरधारकों की इक्विटी}}$	यह ऋण और इक्विटी के मामले में पूँजी संरचना की संरचना को इंगित करता है।
कुल सम्पत्ति अनुपात को ऋण	$\frac{\text{कुल बाहरी दायित्व}}{\text{कुल सम्पत्तियाँ}}$	यह मापता है कि कुल परिसम्पत्तियों का कितना कर्ज ऋण द्वारा वित्तपोषित है।

पूँजी लाभ अनुपात	$\frac{\text{अधिमान शेयरपूँजी} + \text{ऋण पत्र} + \text{अन्य उधार निधियाँ}}{(\text{इक्विटी शेयरपूँजी} + \text{संचय और अधिशेष})}$	यह इक्विटी शेयरधारक निधि के लिए निश्चित ब्याज वाले पूँजी का अनुपात दिखाता है। यह इक्विटी शेयरधारक को वित्तीय उत्तोलन का लाभ भी दर्शाता है।
स्वामित्व अनुपात	$\frac{\text{स्वामित्व निधि}}{\text{कुल सम्पत्तियाँ}}$	यह शेयरधारकों द्वारा वित्त पोषित कुल परिसम्पत्तियों के अनुपात को मापता है।

क्षेत्र अनुपात

ऋण सेवा क्षेत्र अनुपात (DSCR)	$\frac{\text{ऋण सेवाओं के लिए उपलब्ध कमाई}}{\text{ब्याज} + \text{किस्तें}}$	यह विभिन्न ऋण सेवाओं जैसे ब्याज किस्त आदि की प्रतिबद्धता को पूरा करने की क्षमता को मापता है।
ब्याज क्षेत्र अनुपात	$\frac{\text{EBIT}}{\text{ब्याज}}$	यह ब्याज मिलने के लिए व्यापार की क्षमता को मापता है। सापेक्ष अनुपात > 1 है।
अधिमान लाभांश क्षेत्र अनुपात	$\frac{\text{शुद्ध लाभ/करों के बाद कमाई (EAT)}}{\text{अधिमान लाभांश दायित्व}}$	यह अधिमान शेयरधारकों के लाभांश का भुगतान करने की क्षमता को मापता है। आदर्श अनुपात > 1 है।
निर्धारित शुल्क क्षेत्र अनुपात	$\frac{\text{EBIT} + \text{मूल्यह्रास}}{\text{ब्याज} + \frac{\text{ऋण का पुनर्भुगतान}}{1 - \text{कर दर}}}$	अनुपात दर्शाता है कि ब्याज से पहले नकदी प्रवाह कितनी बार और करों में सभी तय वित्तपोषण शुल्क शामिल हैं। आदर्श अनुपात > 1 है।

गतिविधि अनुपात / दक्षता अनुपात / प्रदर्शन अनुपात / टर्नओवर अनुपात

कुल सम्पत्ति कारोबार अनुपात	$\frac{\text{बिक्री/बेचे गए माल की लागत}}{\text{औसत कुल सम्पत्ति}}$	कुल सम्पत्ति उपयोग का एक उपाय यह सवाल का उत्तर देने में मदद करता है—व्यवसाय में निवेश की गई हर सम्पत्ति के मूल्यों से कौन सी बिक्री उत्पन्न की जा रही है ?
निश्चित सम्पत्ति कारोबार अनुपात	$\frac{\text{बिक्री/बेचे गए माल की लागत}}{\text{निश्चित सम्पत्ति}}$	यह अनुपात निश्चित सम्पत्ति क्षमता के बारे में है। स्थाई परिसम्पत्तियों में निवेश किए गए प्रत्येक रुपया से उत्पन्न होने वाली कम बिक्री या लाभ से अधिकता या खराब प्रदर्शन करने वाले उपकरणों का संकेत हो सकता है।

3.30

वित्तीय प्रबंधन

पूँजी कारोबार अनुपात	$\frac{\text{बिक्री/बेचे गए माल की लागत}}{\text{शुद्ध सम्पत्ति}}$	यह इंगित करता है कि दीर्घकालिक रूप से प्रति रूपए की बिक्री के लिए फर्म की क्षमता उत्पन्न होती है।
कार्यशील पूँजी कारोबार अनुपात	$\frac{\text{बिक्री/COGS}}{\text{कार्यशील पूँजी}}$	यह काम करने के लिए फर्म की दक्षता को मापता है।
इन्वेंट्री कारोबार अनुपात	$\frac{\text{COGS/बिक्री}}{\text{औसत इन्वेंट्री}}$	यह अपनी इन्वेंट्री को प्रबंधित करने के लिए फर्म की दक्षता को मापता है।
देनदार कारोबार अनुपात	$\frac{\text{उधार बिक्री}}{\text{औसत प्राप्तबल खाते}}$	यह उस कार्यक्षमता को मापता है। जिस पर फर्म अपनी प्राप्तियाँ प्रबंधित कर रहा है।
प्राप्ति (देनदार) वेग	$\frac{\text{औसत प्राप्य खाते}}{\text{औसत दैनिक उधार बिक्री}}$	यह प्राप्त संग्रह के वेग को मापता है।
देय कारोबार अनुपात	$\frac{\text{वार्षिक शुद्ध उधार खरीद}}{\text{औसत देय खाते}}$	यह वेतन भुगतान के वेग को मापता है।

बिक्री पर आधारित लाभप्रदता अनुपात

सकल लाभ अनुपात	$\frac{\text{सकल लाभ}}{\text{बिक्री}} \times 100$	यह अनुपात हमें व्यापार की क्षमता के बारे में कुछ बताता है कि वह अपने उत्पादक लागतों को नियंत्रित करने के लिए लगातार मार्जिन को प्रबंधित करने के लिए उस उत्पाद को बनाता है जो इसे खरीदता है।
शुद्ध लाभ अनुपात	$\frac{\text{शुद्ध लाभ}}{\text{बिक्री}} \times 100$	यह शुद्ध लाभ और व्यापार की बिक्री के बीच संबंधों को मापता है।
परिचालन लाभ अनुपात	$\frac{\text{परिचालन लाभ}}{\text{बिक्री}} \times 100$	यह व्यापार के परिचालन प्रदर्शन को मापता है।

खर्च अनुपात

बेचे गए माल की लागत अनुपात	$\frac{\text{COGS}}{\text{बिक्री}} \times 100$	
परिचालन व्यय अनुपात	$\frac{\left(\text{प्रशासनिक व्यय} + \text{बिक्री} \right)}{\text{बिक्री}} \times 100$	यह बिक्री के मुकाबले एक विशेष व्यय का हिस्सा रखता है।

परिचालन अनुपात	$\frac{\text{COGS} + \text{परिचालन व्यय}}{\text{बिक्री}} \times 100$
वित्तीय खर्च अनुपात	$\frac{\text{वित्तीय व्यय}}{\text{बिक्री}} \times 100$

सम्पत्ति पर समग्र वापसी से संबंधित लाभप्रदता अनुपात

निवेश पर वापसी	$\frac{\text{वापसी/लाभ/कमाई}}{\text{निवेश}} \times 100$	यह निवेश/इक्विटी निधि/पूँजी नियोजन/सम्पत्तियों पर वापसी का भुगतान करता है।
सम्पत्ति पर वापसी	$\frac{\text{करों के बाद शुद्ध लाभ}}{\text{औसत कुल सम्पत्ति}}$	यह औसत कुल सम्पत्ति/औसत मूर्त सम्पत्ति/औसत निश्चित सम्पत्तियों के प्रति रूपे शुद्ध लाभ का उपाय करता है।
नियोजित पूँजी पर वापसी	$\frac{\text{EBIT}}{\text{पूँजी नियोजन}} \times 100$	यह नियोजित कुल पूँजी पर समग्र आय या ;तो पूर्व कर या पोस्ट करद्ध का उपाय करता है।
नियोजित पूँजी पर वापसी ROCE (पोस्ट कर)		
इक्विटी पर वापसी (ROE)	$\left(\frac{\text{करों के बाद शुद्ध लाभ} - \text{अधिमान लाभांश (यदि है)}}{\text{शुद्ध आय/इक्विटी शेयरधारकों की निधि}} \right) \times 100$	यह इक्विटी शेयरधारकों की तुलना में इक्विटी शेयरधारकों के लिए उपलब्ध आय का संकेत देता है।

Profitability Ratios Required for Analysis from Owner's Point of View

प्रति शेयर कमाई (EPS)	$\frac{\text{इक्विटी शेयरधारकों को उपलब्ध शुद्ध लाभ}}{\text{बकाया इक्विटी शेयरों की संख्या}}$	EPS एक विशेष अवधि में अस्तित्व में प्रत्येक वर्ष के लिए उत्पन्न समग्र लाभ को मापता है।
प्रति शेयर लाभांश (DPS)	$\frac{\text{इक्विटी शेयरधारकों को लाभांश भुगतान}}{\text{बकाया इक्विटी शेयरों की संख्या}}$	इक्विटी शेयरों के मुकाबले लाभ का अनुपात।
लाभांश भुगतान अनुपात	$\frac{\text{प्रति इक्विटी शेयर लाभांश}}{\text{प्रति शेयर कमाई}}$	यह दर्शाता है कि EPS का % लाभांश के रूप में चुकाया जाता है और कमाई बरकरार रखता

Profitability Ratios related to market/valuation/Investors		है।
प्रतिशेयर आय—लागत (P/E) अनुपात	$\frac{\text{प्रति शेयर बाजार मूल्य (MPS)}}{\text{प्रति शेयर कमाई (EPS)}}$	किसी भी समय, P/E अनुपात यह इंगित करता है किसी व्यवसाय की 'दर' या 'मान' कितना उच्च है। संबंधित मूल्य और शेयर बाजार मूल्य निर्धारण के लिए महसूस करने के लिए एक P/E अनुपात सबसे अच्छा एक सेक्टर या बाजार औसत के संदर्भ में देखा जा सकता है।
लाभांश प्राप्ति	$\frac{\text{लाभांश } \pm \text{ शेयर की कीमत में बदलाव}}{\text{प्रारंभिक शेयर की कीमत}} \times 100$ या $\frac{\text{प्रति शेयर लाभांश (DPS)}}{\text{प्रति शेयर बाजार मूल्य (MPS)}}$	शेयरों के बाजार मूल्य के आधार पर यह लाभांश का भुगतान करता है।
कमाई प्राप्ति	$\frac{\text{प्रति शेयर लाभांश (EPS)}}{\text{प्रति शेयर बाजार मूल्य}} \times 100$	यह प्रति शेयर कमाई और शेयरों के बाजार मूल्य का संबंध है।
प्रति शेयर बाजार मूल्य/ पुस्तक मूल्य	$\frac{\text{प्रति शेयर बाजार मूल्य}}{\text{प्रति शेयर पुस्तक मूल्य}}$	यह शेयरधारकों के निवेश की बाजार प्रतिक्रिया को इंगित करता है।
क्यू अनुपात	$\frac{\text{इक्विटी और दायित्वों का बाजार मूल्य}}{\text{सम्पत्ति की अनुमानित प्रतिस्थापन लागत}}$	यह उनके प्रतिस्थापन लागत पर सभी सम्पत्तियों के मुकाबले इक्विटी के बाजार मूल्य के साथ-साथ ऋण भी देता है।

उदाहरण (Illustration) 1.

2018 के अंत तक सोलन में आयोजित सभा में, मैसर्स एचपीसीएल लिमिटेड के निदेशकों ने विविधता लाने का निर्णय लिया। वर्तमान में एचपीसीएल लिमिटेड अपने सभी गोदामों से तैयार माल बेचता है कम्पनी ने 01/01/2019 को ऋणपत्र जारी किए और उसी दिन अचल सम्पत्ति खरीदी। संबंधित अवधि के अग्रलिखित जानकारी आपको दी गई है :

आय विवरण

विवरण	2018 (₹)		2019 (₹)	
नकद बिक्री	30,000		32,000	
उधार बिक्री	2,70,000	3,00,000	3,42,000	3,74,000
(-) बेचे गए माल की लागत		2,36,000		2,98,000
सकल लाभ		64,000		76,000
(-) परिचालन खर्च				
भंडारण	13,000		14,000	
ट्रांसपोर्ट	6,000		10,000	
प्रशासनिक	19,000		19,000	
बेचना	11,000	49,000	14,000	
				57,000
शुद्ध लाभ		15,000		19,000

आर्थिक चिह्न

सम्पत्ति एवं दायित्व	2018 (₹)		2019 (₹)	
अचल सम्पत्ति (शुद्ध ब्लॉक)	—	30,000	—	40,000
प्राप्तियाँ	50,000		82,000	
बैंक में नकदी	10,000		7,000	
स्टॉक	60,000		94,000	
कुल वर्तमान सम्पत्ति (CA)	1,20,000		1,83,000	
देय	50,000		76,000	
कुल वर्तमान दायित्व (CL)	50,000		76,000	
कार्यशील पूँजी (CA-CL)		70,000		1,07,000
कुल सम्पत्ति		1,00,000		1,47,000
द्वारा प्रतिनिधित्व :				
शेयर पूँजी		75,000		75,000
संचय और अधिशेष		25,000		42,000
ऋणपत्र		—		30,000
		1,00,000		1,47,000

वर्ष 2018/2019 के लिए आपको निम्न अनुपातों की गणना करने की आवश्यकता है :

- (i) सकल लाभ अनुपात
- (ii) बिक्री अनुपात के लिए परिचालन व्यय

- (iii) परिचालन लाभ अनुपात
 (iv) पूँजी कारोबार अनुपात
 (v) स्टॉक कारोबार अनुपात
 (iv) शुद्ध आय अनुपात को शुद्ध लाभ, और
 (vii) प्राप्तियाँ संग्रह अवधि।

नियोजित पूँजी से संबंधित अनुपात वर्ष के अंत में पूँजी पर आधारित होना चाहिए। 2 वर्षों के लिए वृद्धि के लिए प्रारम्भिक स्टॉक ₹ 40,000 है।

हल (Solution) :

अनुपातों की गणना		
अनुपात	2018 (₹)	2019 (₹)
1. सकल लाभ अनुपात सकल लाभ/बिक्री	$\frac{64,000 \times 100}{3,00,000} = 21.3\%$	$\frac{76,000 \times 100}{3,74,000} = 20.3\%$
2. बिक्री अनुपात के लिए परिचालन संचालन व्यय/कुल बिक्री	$\frac{49,000 \times 100}{3,00,000} = 16.3\%$	$\frac{57,000 \times 100}{3,74,000} = 15.2\%$
3. परिचालन लाभ अनुपात परिचालन लाभ/कुल बिक्री	$\frac{15,000 \times 100}{3,00,000} = 5\%$	$\frac{19,000 \times 100}{3,74,000} = 5.08\%$
4. पूँजी कारोबार अनुपात नियोजित बिक्री/पूँजी	$\frac{3,00,000}{1,00,000} = 3$	$\frac{3,74,000}{1,47,000} = 2.54$
5. स्टॉक कारोबार अनुपात COGS/औसत स्टॉक	$\frac{2,36,000}{50,000} = 4.72$	$\frac{2,98,000}{77,000} = 3.87$
6. शुद्ध आय के लिए शुद्ध लाभ शुद्ध लाभ/शुद्ध आय	$\frac{15,000 \times 100}{1,00,000} = 15\%$	$\frac{17,000 \times 100}{1,17,000} = 14.5\%$

7. प्राप्तियाँ संग्रह अवधि		
औसत प्राप्तियाँ/औसत दैनिक बिक्री (कार्य नोट देखें)	$\frac{50,000}{739.73} =$	$\frac{82,000}{936.99} =$
	67.6 दिन	87.5 दिन
कार्य नोट :		
औसत दैनिक बिक्री = उधार बिक्री / 365	$\frac{2,70,000}{365} =$	$\frac{3,42,000}{365} =$
	₹ 739.73	₹ 936.99

विश्लेषण : सकल लाभ में गिरावट या तो बिक्री मूल्य में कमी या प्रत्यक्ष खर्च में बढ़ोतरी के कारण हो सकती है (चूँकि खरीद मूल्य समान रहा है) इसी तरह बिक्री के संचालन व्यय के अनुपात में गिरावट आई है। हालांकि परिचालन व्यय बिक्री के साथ थोड़ा असरदार है, इस अनुपात में गिरावट को परिचालन दक्षता में वृद्धि के रूप में जरूरी नहीं बताया जा सकता है। एक गहन विश्लेषण से पता चलता है कि भण्डारण और प्रशासनिक खर्चों में गिरावट आंशिक रूप से परिवहन में वृद्धि और बिक्री के खर्च से बंद कर दिया गया है। सकल लाभ मार्जिन अनुपात में गिरावट के बावजूद परिचालन लाभ अनुपात एक समान रहा है। वास्तव में, बढ़ी बिक्री की वजह से कम्पनी को संचालन प्रदर्शन के मामले में सभी को फायदा नहीं हुआ है।

कम्पनी अपनी पूँजी कुशलतापूर्वक तैनात नहीं कर पाई है। यह संकेत मिलता है कि पूँजी कारोबार में गिरावट 3 से 2.5 गुना तक घट जाएगी। अगर पूँजी का कारोबार 3 पर रहेगा, तो कम्पनी ने क्रमशः ₹ 67,000 से और ₹ 3,350 की बिक्री और लाभ बढ़ाया होगा।

स्टॉक कारोबार अनुपात में गिरावट का अर्थ है कि कम्पनी ने स्टॉक में अपने निवेश को बढ़ा दिया है। शुद्ध आय पर लौटने से संकेत मिलता है कि नियोजित अतिरिक्त पूँजी बिक्री की मात्रा को आनुपातिक रूप से बढ़ाने में विफल रही है। औसत संग्रहण अवधि में वृद्धि से पता चलता है कि कम्पनी बिक्री पर क्रेडिट बढ़ाकर उदार बन गई है। हालांकि ऐसी नीति के चलते मौजूदा परिसम्पत्तियों में समान वृद्धि हुई है।

ऐसा प्रतीत होता है कि व्यापार का विस्तार करने का निर्णय वांछित परिणाम नहीं दिखाया है।

उदाहरण (Illustration) 2.

निम्नलिखित अल्फा लिमिटेड का संक्षिप्त आर्थिक चिट्ठा है :

दायित्व	(₹)	सम्पत्ति	(₹)	(₹)
शेयर पूँजी	1,00,000	भूमि और भवन		80,000
लाभ और हानि खाता	17,000	संयंत्र और मशीनरी	50,000	
वर्तमान दायित्व	40,000	(-) मूल्यहास	15,000	35,000
				1,15,000

3.36

वित्तीय प्रबंधन

		स्टॉक	21,000	
		प्राप्तियां	20,000	
		बैंक	1,000	42,000
कुल	1,57,000	कुल		1,57,000

नीचे दी गई अतिरिक्त जानकारी की सहायता से, आपको 31 मार्च, 2019 तक व्यापार और लाभ और हानि और आर्थिक चिट्ठा तैयार करने की आवश्यकता है :

- पूँजी संरचना के पुनर्गठन के लिए कम्पनी चलायी, साथ ही शेयर पूँजी शेष निम्नानुसार थी :

शेयर पूँजी	50%
अन्य शेयरधारकों के फंड	15%
5% ऋणपत्र	10%
भुगतान	25%

1 अप्रैल को ऋणपत्र जारी किए गए थे, 31 मार्च को ब्याज का भुगतान किया जा रहा है।
- भूमि और भवन अपरिवर्तित बने रहे। अतिरिक्त संयंत्र और मशीनरी खरीदी गई है और एक और ₹ 5,000 अवमूल्यन लिखा गया है।
(कुल अचल सम्पत्ति तब कुल निश्चित और वर्तमान परिसम्पत्तियों का 60% का गठन किया।)
- कार्यशील अनुपात 8 : 5 था।
- त्वरित परिसम्पत्ति अनुपात 1:1 था।
- प्राप्त (बिक्री के अनुपात में चार-पाँचवें) बिक्री अनुपात में 2 महीने की क्रेडिट अवधि का पता चला है। कोई नकदी बिक्री नहीं हुई थी।
- शुद्ध आय पर वापसी 10% थी।
- सकल लाभ बिक्री मूल्य का 15% की दर से था।
- वर्ष के लिए शेयर कारोबार आठ गुना था।
कर पर ध्यान न दें।

हल (Solution) :

विवरण	%	(₹)
शेयर पूँजी	50	1,00,000
अन्य शेयरधारकों के फंड	15	30,000
5% ऋणपत्र	10	20,000
भुगतान	25	50,000
कुल	100%	2,00,000

भूमि और भवन

$$\text{कुल दायित्व} = \text{कुल सम्पत्ति}$$

$$\begin{aligned} \text{₹ 2,00,000} &= \text{कुल सम्पत्ति} \\ \text{निश्चित सम्पत्ति} &= \text{वर्तमान सम्पत्ति और कुल निश्चित सम्पत्ति} \\ &\text{का 60\%} \\ &= (\text{₹}) 2,00,000 \times 60/100 = (\text{₹}) 1,20,000 \end{aligned}$$

संयंत्र और मशीनरी के लिए अतिरिक्त की गणना

	(₹)
कुल निश्चित सम्पत्ति	1,20,000
(-) भूमि और भवन	80,000
संयंत्र और मशीनरी (अवमूल्यन प्रदान करने के बाद)	40,000
31-3-20X8 तक मशीनरी पर मूल्यह्रास	15,000
(+) आगे का मूल्यह्रास	5,000
कुल	20,000

$$\begin{aligned} \text{वर्तमान सम्पत्ति} &= \text{कुल सम्पत्ति} - \text{निश्चित सम्पत्ति} \\ &= \text{₹ 2,00,000} - \text{₹ 1,20,000} = \text{₹ 80,000} \end{aligned}$$

स्टॉक की गणना

$$\begin{aligned} \text{त्वरित अनुपात} &= \frac{\text{वर्तमान सम्पत्ति} - \text{स्टॉक}}{\text{वर्तमान दायित्व}} = 1 \\ &= \frac{\text{₹ 80,000} - \text{स्टॉक}}{\text{₹ 50,000}} = 1 \end{aligned}$$

$$\text{₹ 50,000} = \text{₹ 80,000} - \text{स्टॉक}$$

$$\text{स्टॉक} = \text{₹ 80,000} - \text{₹ 50,000}$$

$$= \text{₹ 30,000}$$

$$\text{प्राप्तियाँ} = \text{त्वरित सम्पत्तियों का 4/5 वाँ}$$

$$= (\text{₹ 80,000} - \text{₹ 30,000}) \times 4/5$$

$$= \text{₹ 40,000}$$

प्राप्ति कारोबार अनुपात

$$= \frac{\text{प्राप्ति}}{\text{उधार बिक्री}} \times 12 \text{ महीने} = 2 \text{ महीने}$$

$$= \frac{40,000 \times 12}{\text{उधार बिक्री}} = 2 \text{ महीने}$$

$$2 \text{ महीने बिक्री} = 4,80,000$$

$$\text{उधार बिक्री} = 4,80,000/2$$

$$= 2,40,000$$

सकल लाभ (बिक्री की 15%)

$$₹ 2,40,000 \times 15/100 = ₹ 36,000$$

शुद्ध आय पर वापसी (शुद्ध लाभ)

$$\text{शुद्ध आय} = ₹ 1,00,000 + ₹ 30,000$$

$$= 1,30,000$$

$$\text{शुद्ध लाभ} = ₹ 1,30,000 \times 10/100 = ₹ 13,000$$

$$= ₹ 20,000 \times 5/100 = ₹ 1,000$$

31.3.2019 को समाप्त वर्ष के लिए अनुमानित लाभ और हानि खाता

	(₹)		(₹)
बेचे गए माल की लागत के	2,04,000	बिक्री से	2,40,000
सकल लाभ के	36,000		
	2,40,000		2,40,000
ऋणपत्र ब्याज के	1,000	सकल लाभ से	36,000
प्रशासन और अन्य खर्च	22,000		
शुद्ध लाभ के	13,000		
	36,000		36,000

31 मार्च, 2019 के अनुसार अनुमानित आर्थिक चिह्न

दायित्व	(₹)	सम्पत्तियाँ	(₹)	(₹)
शेयर पूँजी	1,00,000	निश्चित सम्पत्ति		
लाभ और हानि खाता (17,000 + 13,000)	30,000	भूमि और भवन		80,000
5% ऋणपत्र	20,000	संयंत्र और मशीनरी	60,000	
वर्तमान दायित्व :		(-) मूल्यह्रास	20,000	40,000
		वर्तमान सम्पत्ति :		
व्यापार लेनदार	50,000	स्टॉक	30,000	
		देनदार	40,000	
		बैंक	10,000	80,000
	2,00,000			2,00,000

उदाहरण (Illustration) 3.

एक्स कम्पनी ने अगले वर्ष के लिए योजना बनाई है। यह अनुमान लगाया गया है कि कम्पनी ₹ 8,00,000 की कुल सम्पत्ति का कार्य करेगी, उधार ली गई पूँजी द्वारा प्रतिवर्ष 8 प्रतिशत की ब्याज लागत पर 50% सम्पत्ति का वित्तपोषण किया जा रहा है। वर्ष के लिए प्रत्यक्ष लागत ₹ 4,80,000 अनुमानित है और अन्य सभी परिचालन व्यय ₹ 80,000 के अनुमानित हैं। सामान प्रत्यक्ष लागतों के 150 प्रतिशत पर ग्राहकों को बेचा जाएगा। कर की दर 50% होने का अनुमान है।

आपको गणना करने की आवश्यकता है : (i) शुद्ध लाभ मार्जिन, (ii) सम्पत्ति पर वापसी, (iii) सम्पत्ति का कारोबार और (iv) मालिकों की इक्विटी पर वापसी।

हल (Solution) :

शुद्ध लाभ की गणना निम्नानुसार है :

विवरण	(₹)	(₹)
बिक्री (₹ 4,80,000 का 150%)		7,20,000
प्रत्यक्ष लागत		4,80,000
सकल लाभ		2,40,000
परिचालन खर्च	80,000	
ब्याज में परिवर्तन (₹ 4,00,000 का 8%)	32,000	1,12,000
करों से पहले लाभ		1,28,000
कर (@ 50%)		64,000
करों के बाद शुद्ध लाभ		64,000

$$(i) \quad \text{शुद्ध लाभ मार्जिन} = \frac{\text{कर के बाद लाभ}}{\text{बिक्री}} = \frac{₹ 64,000}{₹ 7,20,000}$$

$$= 0.89 \text{ या } 8.9\%$$

$$\text{शुद्ध लाभ मार्जिन} = \frac{\text{EBIT} (1 - T)}{\text{बिक्री}} = \frac{₹ 1,60,000(1 - 0.5)}{₹ 7,20,000}$$

$$= 0.111 \text{ या } 11.1\%$$

$$(ii) \quad \text{सम्पत्ति पर वापसी} = \frac{\text{EBIT} (1 - T)}{\text{सम्पत्ति}} = \frac{₹ 1,60,000(1 - 0.5)}{₹ 8,00,000}$$

$$= 0.10 \text{ या } 10\%$$

$$(iii) \quad \text{सम्पत्ति कारोबार} = \frac{\text{बिक्री}}{\text{सम्पत्ति}} = \frac{₹ 7,20,000}{₹ 8,00,000} = 0.9 \text{ बार}$$

$$(iv) \quad \text{इक्विटी पर वापसी} = \frac{\text{कर के बाद शुद्ध लाभ}}{\text{मालिक की इक्विटी}}$$

$$= \frac{₹ 64,000}{₹ 8,00,000 \text{ का } 50\%} = \frac{₹ 64,000}{₹ 4,00,000}$$

$$= 0.16 \text{ या } 16\%$$

उदाहरण (Illustration) 4.

एबीसी कंपनी 2/10, नेट 30 की शर्तों पर नलसाजी जुड़नार बेचती है। इसके पिछले 3 वर्षों में वित्तीय विवरण हैं :

विवरण	2017 (₹)	2018 (₹)	2019 (₹)
रोकड़	30,0000	20,000	5,000
प्राप्य खाते	2,00,000	2,60,000	2,90,000
स्टॉक	4,00,000	4,80,000	6,00,000
शुद्ध स्थायी सम्पत्तियां	8,00,000	8,00,000	8,00,000
	14,30,000	15,60,000	16,95,000
देय खाते	2,30,000	3,00,000	3,80,000
स्रोत	2,00,000	2,10,000	2,25,000
बैंक ऋण, अल्पकालिक	1,00,000	1,00,000	1,40,000
दीर्घकालीन ऋण	3,00,000	3,00,000	3,00,000
सामान्य स्टॉक	1,00,000	1,00,000	1,00,000
प्रतिधारित आय	5,00,000	5,50,000	5,50,000
	14,30,000	15,60,000	16,95,000
बिक्री	40,00,000	43,00,000	38,00,000
बेचे गए माल की लागत	32,00,000	36,00,000	33,00,000
शुद्ध लाभ	3,00,000	2,00,000	1,00,000

पिछले 3 वर्षों में कम्पनी की वित्तीय स्थिति और प्रदर्शन का विश्लेषण क्या कोई समस्या है ?

हल (Solution) :

अनुपात	2017	2018	2019
वर्तमान अनुपात	1.19	1.25	1.20
त्वरित-परीक्षण अनुपात	0.43	0.46	0.40
औसत वसूली अवधि	18	22	27
इन्वेंट्री कारोबार	NA*	8.2	6.1
शुद्ध आय के लिए कुल ऋण	1.38	1.40	1.61
कुल पूँजीकरण के लिए दीर्घावधि ऋण	0.33	0.32	0.32
सकल लाभ मार्जिन	0.20	0.163	0.132
शुद्ध लाभ मार्जिन	0.075	0.047	0.026
सम्पत्ति कारोबार	2.80	2.76	2.24
सम्पत्ति पर वापसी	0.21	0.13	0.06

विश्लेषण : इस अवधि में कम्पनी की लाभप्रदता लगातार घट गई है। के रूप में केवल ₹ 50,000 बनाए रखा आय में जोड़ा जाता है, कम्पनी को पर्याप्त लाभांश का भुगतान किया जाना चाहिए। प्राप्तियाँ धीमी गति से बढ़ रही हैं, हालांकि औसत संग्रह अवधि अभी भी दी गई शर्तों के मुकाबले बहुत ही उचित है। इन्वेन्ट्री कारोबार भी धीमा हो रहा है, जो इन्वेन्ट्रीज में एक संबंधित वृद्धि दर्शाता है। प्राप्तियों और इन्वेन्ट्री में वृद्धि इस तथ्य के साथ मिलकर कि निवल मूल्य में बहुत कम वृद्धि हुई है, जिसके परिणामस्वरूप कुल ऋण-मूल्य अनुपात में वृद्धि हुई है, जो एक उच्च स्तर के रूप में एक पूर्ण आधार पर माना जाना चाहिए।

वर्तमान और त्वरित-परीक्षण अनुपात में उतार-चढ़ाव हो रहा है, लेकिन वर्तमान अनुपात विशेष रूप से प्रेरणादायक नहीं है। इन दोनों अनुपातों की तरलता में गिरावट के बारे में बताते हुए, इन अनुपातों में गिरावट का अभाव प्राप्तियाँ और इन्वेन्ट्री इन दो परिसम्पत्तियों की तरलता में गिरावट का खुलासा हुआ है। सकल लाभ और शुद्ध लाभ मार्जिन दोनों में काफी गिरावट आई है। दोनों के बीच संबंध बताते हैं कि कम्पनी ने विशेष रूप से 2016 में सापेक्ष खर्च घटा दिया है। इन्वेन्ट्री और प्राप्तियों में वृद्धि का परिणाम परिसम्पत्ति कारोबार अनुपात में गिरावट आयी है और यह लाभप्रदता में गिरावट के साथ-साथ, परिसम्पत्ति अनुपात पर लौटने में तेज कमी हुई है।

उदाहरण (Illustration) 5.

निम्नलिखित सूचनाएँ नव्या लिमिटेड के लिए उपलब्ध हैं, साथ ही विभिन्न उद्योगों के लिए प्रासंगिक विभिन्न अनुपात के साथ-साथ यह उपलब्ध है। नव्या लिमिटेड की ताकत और कमजोरी पर अपनी टिप्पणी दीजिए, जो कि दिए गए उद्योग मानदंडों के साथ अपने अनुपात की तुलना करता है।

नव्या लिमिटेड

31.3.2019 तक आर्थिक चिह्न

दायित्व	(₹)	सम्पत्तियाँ	(₹)
इक्विटी शेयर पूँजी	48,00,000	निश्चित सम्पत्ति	24,20,000
10% ऋणपत्र	9,20,000	पूँजी	8,80,000
विविध लेनदार	6,60,000	विविध देनदार	11,00,000
देय बिल	8,80,000	स्टॉक	33,00,000
अन्य चालू दायित्व	4,40,000		
कुल	77,00,000	कुल	77,00,000

लाभप्रदता का विवरण

31.3.2019 को समाप्त वर्ष के लिए

विवरण	(₹)	(₹)
बिक्री		1,10,00,000
(-) बेचे गए माल की लागत :	-	-
सामग्री	41,80,000	-
वेतन	26,40,000	-

3.42

वित्तीय प्रबंधन

कारखाना अतिरिक्त	12,98,000	81,18,000
सकल लाभ	–	28,82,000
(–) बिक्री और वितरण लागत	11,00,000	–
प्रशासनिक लागत	12,28,000	23,28,000
ब्याज और करों से पहले की कमाई	–	5,54,000
(–) ब्याज प्रभार	–	92,000
कर से पहले कमाई	–	4,62,000
(–) कर @ 50%	–	2,31,000
शुद्ध लाभ (PAT)		2,31,000

उद्योग मानदंड

अनुपात	मानदंड
चालू सम्पत्तियां/चालू दायित्व	2.5
बिक्री/देनदार	8.0
बिक्री/स्टॉक	9.0
बिक्री/कुल सम्पत्तियाँ	2.0
शुद्ध लाभ/बिक्री	3.5%
शुद्ध लाभ/कुल सम्पत्तियाँ	7.0%
शुद्ध लाभ/शुद्ध आय	10.5%
कुल ऋण/कुल सम्पत्तियाँ	60.0%

उत्तर (Solution)

अनुपात	नव्या लिमिटेड	उद्योग मानदंड
1. $\frac{\text{चालू सम्पत्तियां}}{\text{चालू दायित्व}}$	$\frac{52,80,000}{19,80,000} = 2.67$	2.50
2. $\frac{\text{बिक्री}}{\text{देनदार}}$	$\frac{1,10,00,000}{11,00,000} = 10.0$	8.00
3. $\frac{\text{बिक्री}}{\text{स्टॉक}}$	$\frac{1,10,00,000}{33,00,000} = 3.33$	9.00
4. $\frac{\text{बिक्री}}{\text{कुल सम्पत्ति}}$	$\frac{1,10,00,000}{77,00,000} = 1.43$	2.00
5. $\frac{\text{शुद्ध लाभ}}{\text{बिक्री}}$	$\frac{2,31,00,000}{1,10,00,000} = 2.10\%$	3.50%

6.	$\frac{\text{शुद्ध लाभ}}{\text{कुल सम्पत्ति}}$	$\frac{2,31,00,000}{77,00,000} = 3.00\%$	7%
7.	$\frac{\text{शुद्ध लाभ}}{\text{शुद्ध आय}}$	$\frac{2,31,00,000}{48,00,000} = 4.81\%$	10.5%
8.	$\frac{\text{कुल ऋण}}{\text{कुल सम्पत्ति}}$	$\frac{29,00,000}{77,00,000} = 37.66\%$	60%

टिप्पणियाँ (Comments) :

- वर्तमान अनुपात के संबंध में उद्योग मानदंडों और लेनदार अनुपात के लिए बिक्री से नव्या लिमिटेड की स्थिति बेहतर है।
- हालांकि, कुल सम्पत्तियों में बिक्री और बिक्री की स्थिति उद्योग के आदर्शों की तुलना में खराब है।
- फर्म का भी शुद्ध लाभ अनुपात, कुल सम्पत्ति के लिए शुद्ध लाभ और कुल लाभ अनुपात के लिए कुल लाभ उद्योग मानकों की तुलना में बहुत कम है।
- कुल परिसम्पत्ति अनुपात के लिए कुल ऋण का सुझाव है कि फर्म कम स्तर पर तैयार है और ऋण का उपयोग सम्पत्ति के लिए किया जाता है।

सारांश (SUMMARY)

- **वित्तीय विश्लेषण और उसके उपकरण :** किसी उद्यम की वित्तीय ताकत और कमजोरियों का पता लगाने के लिए आवश्यक सामग्री और प्रासंगिक जानकारी प्राप्त करने के उद्देश्य के लिए, वित्तीय विवरण में दर्शाए गए आँकड़ों का विश्लेषण करना आवश्यक है। वित्तीय प्रबंधक के पास कुछ विश्लेषणात्मक उपकरण हैं, जो वित्तीय विश्लेषण और नियोजन में सहायता करते हैं। मुख्य उपकरण अनुपात विश्लेषण और नकदी प्रवाह विश्लेषण हैं।
- **अनुपात विश्लेषण :** अनुपात विश्लेषण इस तथ्य पर आधारित है कि एक अकेले लेखांकन आँकड़ा किसी भी अर्थपूर्ण जानकारी को नहीं बता सकता है, लेकिन जब किसी अन्य व्यक्ति के सापेक्ष के रूप में व्यक्त किया जाता है, तो निश्चित रूप से कुछ महत्वपूर्ण जानकारी प्रदान कर सकती। अनुपात विश्लेषण आर्थिक चिट्ठा, आय विवरण और नकदी प्रवाह विवरण से भिन्न संख्याओं की तुलना नहीं कर रहा है। यह वित्तीय विश्लेषण के उद्देश्य के लिए पिछले वर्षों, अन्य कम्पनियों उद्योग या यहाँ तक की अर्थव्यवस्था की तुलना कर रहा है।
- **अनुपातों का प्रकार और अनुपात विश्लेषण का महत्व :** अनुपात निम्नलिखित चार व्यापक श्रेणियों में वर्गीकृत किया जा सकता है :
 - तरलता अनुपात
 - पूँजी संरचना/उत्तोलन अनुपात
 - गतिविधि अनुपात

iv. लाभप्रदता अनुपात

- एक व्यावसायिक चिंता का प्रदर्शन विश्लेषण करने की एक लोकप्रिय तकनीक वित्तीय अनुपात विश्लेषण का है। वित्तीय प्रबंधन के एक उपकरण के रूप में, वे महत्वपूर्ण महत्व के हैं। अनुपात विश्लेषण का महत्व इस तथ्य में निहित है कि यह एक तुलनात्मक आधार पर तथ्यों को प्रस्तुत करता है और एक फर्म के प्रदर्शन के संबंध में संदर्भों को आकर्षित करने में सक्षम बनाता है।
- अनुपात विश्लेषण निम्नलिखित पहलुओं के संबंध में एक फर्म के प्रदर्शन का आकलन करने में प्रासंगिक है :
 - i. तरलता की स्थिति
 - ii. दीर्घकालिक शोधन क्षमता
 - iii. परिचालन दक्षता
 - iv. समग्र लाभप्रदता
 - v. इंटर फर्म तुलना
 - vi. बजट के समर्थन के लिए वित्तीय अनुपात।

आपके ज्ञान का परीक्षण

MCQs पर आधारित प्रश्न

1. शुद्ध बिक्री करने वाले पूँजी के लिए शुद्ध बिक्री का अनुपात एक है :

(a) लाभप्रदाता अनुपात	(b) तरलता अनुपात
(c) वर्तमान अनुपात	(d) पूँजी कारोबार की दर बढ़ाना
2. दीर्घकालिक शोधन क्षमता का संकेत :

(a) ऋण/इक्विटी अनुपात	(b) वर्तमान अनुपात
(c) परिचालन अनुपात	(d) शुद्ध लाभ अनुपात
3. ब्याज और बिक्री के लिए कर से पहले शुद्ध लाभ का अनुपात है :

(a) सकल लाभ अनुपात	(b) शुद्ध लाभ अनुपात
(c) परिचालन लाभ अनुपात	(d) ब्याज क्षेत्र अनुपात
4. वर्षों में वित्तीय चर में परिवर्तन देखे जाने पर है :

(a) कार्यक्षेत्र विश्लेषण	(b) क्षैतिज विश्लेषण
(c) पीर-फर्म विश्लेषण	(d) उद्योग विश्लेषण
5. प्राप्य-कारोबार अनुपात प्रबंधन को निम्न में मदद करता है :

(a) संसाधनों का प्रबंध करना	(b) प्रबंध सूची
(c) ग्राहकों संबंधों को प्रबंधित करना	(d) कार्यशील पूँजी का प्रबंध करना

सैद्धांतिक प्रश्न

1. निवेश विश्लेषण के लिए गणना के किसी भी तीन अनुपातों पर चर्चा कीजिए।

2. परिचालन दक्षता और तरलता की स्थिति के पहलुओं पर कम्पनी के प्रदर्शन का मूल्यांकन करने के लिए वित्तीय अनुपात पर चर्चा करें।
3. स्टॉक टर्न ओवर अनुपात और गियरिंग अनुपात का क्या मतलब है ?
4. ड्यूपॉन्ट मॉडल का उपयोग करके इक्विटी पर लौटों की संरचना पर चर्चा कीजिए।
5. वित्तीय अनुपात की सीमाओं का संक्षेप में बताएं।
6. ड्यूपॉन्ट मॉडल पर चर्चा कीजिए।

व्यावहारिक प्रश्न

1. एक फर्म की कुल बिक्री (सभी क्रेडिट) हैं ₹ 6,40,000 इसमें 15% का सकल लाभ मार्जिन और 2.5 का मौजूदा अनुपात है। फर्म की वर्तमान देनदारियाँ, ₹ 96,000, इन्वेंट्री ₹ 48,000 और नकद ₹ 16,000 हैं।

(a) फर्म द्वारा किए जाने वाले औसत इन्वेंट्री का निर्धारण करते हैं, अगर 5 गुना के इन्वेंट्री टर्नओवर की उम्मीद है ? (एक 360 दिन वर्ष मान लें) (b) औसत संग्रह अवधि निर्धारित करें यदि देनदारों का प्रारम्भिक जमा ₹80,000 का है तो ? (एक 360 दिन वर्ष मानें)

2. बीटा लिमिटेड पूँजी संरचना निम्नानुसार है :

₹10 प्रत्येक का इक्विटी शेयर पूँजी	8,00,000
₹10 प्रत्येक का 9% अधिमान शेयर पूँजी	3,00,000
	11,00,000

अतिरिक्त जानकारी लाभ (कर के बाद 35 प्रतिशत), ₹ 2,70,000 मूल्यहास, ₹ 60,000 इक्विटी लाभांश का भुगतान, 20 प्रतिशत, इक्विटी शेयरों के बाजार मूल्य ₹ 40.

आवश्यक कार्यों को दिखाने के लिए आपको निम्नलिखित की गणना करने की आवश्यकता है:

- (a) इक्विटी शेयरों पर लाभांश उपज
 - (b) अधिमान और इक्विटी लाभांश के लिए कवर
 - (c) आय प्रति शेयर
 - (d) मूल्य-आय-अनुपात
3. पीक्यूआर लिमिटेड की निम्नलिखित लेखा सूचना और वित्तीय अनुपात 31 दिसम्बर, 2018 को समाप्त वर्ष से संबंधित है :

I. लेखांकन जानकारी :	
सकल लाभ	बिक्री का 15%
शुद्ध लाभ	बिक्री का 8%
कच्चे माल का सेवन	कार्य लागत का 20%
प्रत्यक्ष मजदूरी	कार्य लागत का 10%
कच्चे माल का भण्डार	3 महीने इस्तेमाल
तैयार माल का स्टॉक	कार्य लागत का 6%

ऋण संग्रहण अवधि सभी बिक्री क्रेडिट पर हैं	60 दिन
II. वित्तीय अनुपात :	
बिक्री के लिए अचल सम्पत्ति	1 : 3
वर्तमान सम्पत्ति के लिए अचल सम्पत्ति	13 : 11
वर्तमान अनुपात	2 : 1
वर्तमान देनदारियों के लिए दीर्घकालिक ऋण	2 : 1
भंडार और अधिशेष के लिए पूँजी	1 : 4

अगर 31 दिसम्बर, 2017 तक तय परिसम्पत्तियों का मूल्य ₹ 26 लाख की राशि है, तो 31 दिसम्बर, 2018 को समाप्त वर्ष के लिए कम्पनी का संक्षिप्त लाभ और हानि खाता तैयार करना और 3 वर्ष का दिसम्बर, 2018 को आर्थिक चिट्ठा भी तैयार किया गया।

4. गणपति लिमिटेड ने 31 मार्च, 2019 को समाप्त वर्ष से संबंधित निम्नलिखित अनुपात और सूचनाएँ प्रस्तुत की हैं :

बिक्री	₹ 60,00,000
शुद्ध आय पर वापसी	25%
आयकर की दर	50%
संचय के लिए शेयर पूँजी	7.3
वर्तमान अनुपात	2
बिक्री में शुद्ध लाभ	6.25%
इन्वेंट्री कारोबार (माल की कीमत पर आधारित)	12
बेचे गए माल की कीमत	₹ 18,00,000
ऋणपत्र पर ब्याज	₹ 60,000
प्राप्तियाँ	₹ 2,00,000
देय	₹ 2,00,000

आपकी आवश्यकता है :

- (a) 31 मार्च, 2019 को समाप्त वर्ष के लिए परिचालन व्यय की गणना
(b) 31 मार्च को निम्न स्वरूप में आर्थिक चिट्ठा तैयार करें :

31 मार्च, 2019 को आर्थिक चिट्ठा

दायित्व	(₹)	सम्पत्तियाँ	(₹)
शेयर पूँजी		निश्चित सम्पत्तियाँ	
संचय और अधिशेष		वर्तमान सम्पत्तियाँ	
15% ऋणपत्र		सरकार	
देय		प्राप्तियाँ	
		पूँजी	

5. निम्नलिखित जानकारी का उपयोग करके इस, आर्थिक चिट्ठा को पूरा करें :

शुद्ध आय के लिए दीर्घावधि ऋण	0.5 to 1
कुल सम्पत्ति की मात्रा	2.5×
औसत वसूली अवधि*	18 days
इन्वेंट्री कारोबार	9×
सकल लाभ मार्जिन	10%
त्वरित-परीक्षण अनुपात	1 to 1

* एक 360 दिवसीय वर्ष और क्रेडिट पर सभी बिक्री मानिए।

	₹		₹
पूँजी	—	पूँजी	1,00,000
प्राप्तियाँ खाते	—	प्राप्तियाँ खाते	—
इन्वेंट्री	—	इन्वेंट्री	1,00,000
संयंत्र और उपकरण	—	संयंत्र और उपकरण	1,00,000
कुल सम्पत्ति	—	कुल सम्पत्ति	—

समाधान

MCQs पर आधारित प्रश्नों के उत्तर

[1. (d), 2. (a), 3. (c), 4. (b), 5. (d)]

सैद्धांतिक प्रश्नों के उत्तर

1. कृपया पैराग्राफ 3.3.4.2 देखें
2. कृपया पैराग्राफ 3.3.4 देखें
3. कृपया पैराग्राफ 3.3.3 और 3.3.2 देखें
4. कृपया पैराग्राफ 3.3.4.2 देखें
5. कृपया पैराग्राफ 3.5 देखें
6. कृपया पैराग्राफ 3.3.4.2 देखें

व्यावहारिक प्रश्नों के उत्तर

$$1. (a) \quad \text{इन्वेंट्री कारोबार} = \frac{\text{बेचे गए माल की लागत}}{\text{औसत इन्वेंट्री}}$$

चूँकि सकल लाभ मार्जिन 15 प्रतिशत है, बिक्री के माल की लागत बिक्री का 85 प्रतिशत होना चाहिए।

$$\text{बेचे गए माल की लागत} = 0.85 \times ₹ 6,40,000 = ₹ 5,44,000$$

$$\text{अतः} \quad = \frac{₹ 5,44,000}{\text{औसत इन्वेंट्री}} = 5$$

$$\text{औसत इन्वेंट्री} = \frac{\text{₹ 5,44,000}}{5} = \text{₹ 1,08,000}$$

$$(b) \quad \text{औसत वसूली अवधि} = \frac{\text{औसत प्राप्तियां}}{\text{उधार बिक्री}} \times 360 \text{ दिन}$$

$$\text{औसत प्राप्तियाँ} = \frac{(\text{प्रारंभिक प्राप्तियां} + \text{समापन प्राप्तियां})}{2}$$

प्राप्तियों का समापन शेष निम्नानुसार पाया जाता है :

	(₹)	(₹)
वर्तमान सम्पत्तियाँ (वर्तमान दायित्व की 2.5)		2,40,000
(-) इन्वेंट्री	48,000	
पूँजी	16,000	64,000
∴ प्राप्तियाँ		1,76,000

$$\begin{aligned} \text{औसत प्राप्तियाँ} &= \frac{(\text{₹ 1,76,000} + \text{₹ 80,000})}{2} \\ &= \text{₹ 2,56,000} \div 2 = \text{₹ 1,28,000} \end{aligned}$$

$$\text{औसत वसूली अवधि} = \frac{\text{₹ 1,28,000}}{\text{₹ 6,40,000}} \times 360 \text{ दिन} = 72 \text{ दिन}$$

2. (a) इक्विटी शेयरों पर लाभांश उपज

$$= \frac{\text{प्रति अंश लाभांश}}{\text{प्रति अंश बाजार मूल्य}} \times 100 = \frac{\text{₹ 2} (= 0.20 \times 10)}{\text{₹ 40}} \times 100 = 5 \text{ प्रतिशत}$$

(b) लाभांश क्षेत्र अनुपात

$$\begin{aligned} (i) \quad \text{अधिमान} &= \frac{\text{कर के बाद लाभ}}{\text{अधिमान शेयरधारकों को देय लाभांश}} \\ &= \frac{\text{₹ 2,70,000}}{\text{₹ 27,000} (= 0.90 \times \text{₹ 3,00,000})} \\ &= 10 \text{ बार} \end{aligned}$$

$$(ii) \quad \text{इक्विटी} = \frac{\text{कर के बाद लाभ} - \text{अधिमान शेयर लाभांश}}{\text{वर्तमान में इक्विटी शेयरधारकों को देय लाभांश}} \\ \text{प्रति शेयर ₹ 2 की दर}$$

$$= \frac{₹ 2,70,000 - 27,000}{₹ 1,60,000 (80,000 \text{ शेयर} \times ₹ 2)} = 1.52 \text{ बार}$$

(c) प्रति इक्विटी शेयर कमाई

$$= \frac{\text{इक्विटी शेयरधारकों को उपलब्ध कमाई}}{\text{इक्विटी शेयरों की संख्या बकाया}}$$

$$= \frac{₹ 2,43,000}{₹ 80,000} = ₹ 3.04 \text{ प्रति शेयर}$$

(d) आय-लागत (P/E) अनुपात

$$= \frac{\text{प्रति शेयर बाजार मूल्य}}{\text{प्रति शेयर इक्विटी}} = \frac{₹ 40}{₹ 3.04} = 13.2 \text{ बार}$$

3. (a) कार्य नोट :

(i) बिक्री की गणना

$$\frac{\text{निश्चित सम्पत्ति}}{\text{बिक्री}} = \frac{1}{3}$$

$$\therefore \frac{26,00,000}{\text{बिक्री}} = \frac{1}{3} \Rightarrow \text{बिक्री} = ₹ 78,00,000$$

(ii) वर्तमान सम्पत्ति की गणना

$$\frac{\text{निश्चित सम्पत्ति}}{\text{वर्तमान सम्पत्ति}} = \frac{13}{11}$$

$$\therefore \frac{26,00,000}{\text{वर्तमान सम्पत्ति}} = \frac{13}{11} \Rightarrow \text{वर्तमान सम्पत्ति} = ₹ 22,00,000$$

(iii) कच्चे माल की खपत और प्रत्यक्ष मजूदरी की गणना

	₹
बिक्री	78,00,000
(-) सकल लाभ	11,70,000
कार्य लागत	66,30,000

कच्चे माल की खपत (कार्य लागत की 20%)

₹ 13,26,000

प्रत्यक्ष मजूदरी (कार्य लागत की 10%)

₹ 6,63,000

(iv) कच्चे माल के स्टॉक की गणना (= 3 महीनों का उपयोग)

$$= 13,26,000 \times \frac{3}{12} = ₹ 3,31,500$$

(v) तैयार माल के स्टॉक की गणना (= कार्य लागत का 6%)

$$= ₹ 66,30,000 \times \frac{6}{100} = ₹ 3,97,800$$

(vi) वर्तमान दायित्वों की लागत

$$\frac{\text{वर्तमान सम्पत्ति}}{\text{वर्तमान दायित्व}} = 2$$

$$\frac{22,00,000}{\text{वर्तमान दायित्व}} = 2 \Rightarrow \text{वर्तमान दायित्व} = ₹ 11,00,000$$

(vii) प्राप्तियों की गणना

$$\text{औसत वसूली अवधि} = \frac{\text{प्राप्तियां}}{\text{उधार बिक्री}} \times 365$$

$$\frac{\text{प्राप्तियां}}{78,00,000} \times 365 = 60 \Rightarrow \text{प्राप्तियाँ} = ₹ 12,82,191.78 \text{ या } ₹ 12,82,192$$

(viii) दीर्घावधि ऋण की गणना

$$\frac{\text{दीर्घावधि ऋण}}{\text{वर्तमान दायित्व}} = \frac{2}{1}$$

$$\frac{\text{दीर्घावधि ऋण}}{11,00,000} = \frac{2}{1} \Rightarrow \text{दीर्घावधि ऋण} = ₹ 22,00,000$$

(ix) पूँजी बैलेंस की गणना

वर्तमान सम्पत्ति		22,00,000
(-) प्राप्तियाँ	12,82,192	
कच्चा माल स्टॉक	3,31,500	
तैयार माल स्टॉक	3,97,800	20,11,492
पूँजी बैलेंस		1,88,508

(x) शुद्ध आय की गणना

निश्चित सम्पत्ति		26,00,000
वर्तमान सम्पत्ति		22,00,000
कुल सम्पत्ति		48,00,000
(-) दीर्घावधि ऋण	22,00,000	
वर्तमान दायित्व	11,00,000	33,00,000
शुद्ध आय		15,00,000

$$\text{शुद्ध आय} = \text{शेयर पूँजी} + \text{संचय} = 15,00,000$$

$$\frac{\text{पूँजी}}{\text{संचय और अधिशेष}} = \frac{1}{4} \Rightarrow \text{शेयर पूँजी} = 15,00,000 \times \frac{1}{5}$$

$$= ₹ 3,00,000$$

$$\text{संचय और अधिशेष} = 15,00,000 \times \frac{4}{5} = ₹ 12,00,000$$

PQR लिमिटेड लाभ और हानि खाता

31 दिसम्बर, 2018 का समाप्त वर्ष के लिए

विवरण	(₹)	विवरण	(₹)
प्रत्यक्ष माल के	13,26,000	बिक्री में	78,00,000
प्रत्यक्ष मजदूरी के	6,63,000		
कार्य (अतिरिक्त) के	46,41,000		
सन्तुलन आँकड़ा			
सकल लाभ के लिए लाया			
(बिक्री का 15%)	11,70,000		
	78,00,000		78,00,000
बिक्री और वितरण खर्च (सन्तुलन आँकड़ा)	5,46,000	सकल लाभ से लाया	11,70,000
शुद्ध लाभ के			
(बिक्री का 8%)	6,24,000		
	11,70,000		11,70,000

PQR लिमिटेड का आर्थिक चिट्ठा

31 दिसम्बर, 2018 तक

दायित्व	(₹)	सम्पत्तियाँ	(₹)
शेयर पूँजी	3,00,000	निश्चित सम्पत्ति	26,00,000
संचय और अधिशेष	12,00,000	वर्तमान सम्पत्ति :	

दीर्घावधि ऋण	22,00,000	कच्चे माल का स्टॉक	3,31,500
वर्तमान दायित्व	11,00,000	तैयार माल का स्टॉक	3,97,800
		प्राप्तियां	12,82,192
		पूँजी	1,88,508
	48,00,000		48,00,000

4. (a) 31 मार्च, 2019 को समाप्त वर्ष के लिए परिचालन व्यय की गणना :

विवरण	(₹)	(₹)
शुद्ध लाभ (बिक्री का 6.25%)		3,75,000
(+) आय कर (50%)		3,75,000
कर से पहले लाभ (PBT)		7,50,000
(+) ब्याज ऋणपत्र		60,000
कर और ब्याज से पहले लाभ (PBIT)		8,10,000
बिक्री		60,00,000
(-) बेचे गए माल की लागत	18,00,000	
PBIT	8,10,000	26,10,000
परिचालन व्यय		33,90,000

(b) 31 मार्च, 2019 को आर्थिक चिह्न :

दायित्व	(₹)	सम्पत्तियाँ	(₹)
अंश पूँजी	10,50,000	निश्चित सम्पत्ति	17,00,000
संचय और अधिशेष	4,50,000	वर्तमान सम्पत्ति :	
15% ऋणपत्र	4,00,000	स्टॉक	1,50,000
देयता	2,00,000	प्राप्तियां	2,00,000
		पूँजी	50,000
	21,00,000		21,00,000

कार्य नोट्स:

(i) शेयर पूँजी और संचय

शुद्ध आय पर वापसी 25% है, इसलिए ₹ 3,75,000 के कर के बाद लाभ शुद्ध आय के 25% के बराबर होना चाहिए।

$$\text{शुद्ध आय} \times \frac{25}{100} = ₹ 3,75,000$$

$$\therefore \text{शुद्ध आय} = \frac{₹ 3,75,000 \times 100}{25} = ₹ 15,00,000$$

शेयर पूँजी के संचय का अनुपात 7:3 है

$$\text{शेयर पूँजी} = 15,00,000 \times \frac{7}{10} = ₹ 10,50,000$$

$$\text{संचय} = 15,00,000 \times \frac{3}{10} = ₹ 4,50,000$$

(ii) ऋणपत्र

$$\text{ऋणपत्रों कर ब्याज @ 15\%} = ₹ 60,000$$

$$\therefore \text{ऋणपत्र} = \frac{60,000 \times 100}{15} = ₹ 4,00,000$$

(iii) वर्तमान सम्पत्ति

$$\text{वर्तमान अनुपात} = 2$$

$$\text{देयताएं} = ₹ 2,00,000$$

$$\text{वर्तमान सम्पत्ति} = 2 \text{ वर्तमान दायित्व} = 2 \times 2,00,000 = ₹ 4,00,000$$

(iv) निश्चित सम्पत्ति

दायित्व	(₹)
शेयर पूँजी	10,50,000
संचय	4,50,000
ऋणपत्र	4,00,000
देयताएँ	2,00,000
(-) वर्तमान सम्पत्ति	21,00,000
निश्चित सम्पत्ति	4,00,000
	17,00,000

(v) वर्तमान सम्पत्तियों की संरचना

$$\text{इन्वेंट्री कारोबार} = 12$$

$$\frac{\text{बेचे गये माल की लागत}}{\text{समापन स्टॉक}} = 12$$

$$\text{समापन स्टॉक} = \frac{₹ 18,00,000}{12}$$

$$= ₹ 1,50,000$$

संरचना	₹
स्टॉक	1,50,000
प्राप्तियाँ	2,00,000

पूँजी (सन्तुलन आँकड़ा)	50,000
कुल वर्तमान सम्पत्तियाँ	4,00,000

5.
$$\frac{\text{दीर्घावधि ऋण}}{\text{शुद्ध आय}} = 0.5 = \frac{\text{दीर्घावधि ऋण}}{2,00,000}$$

दीर्घावधि ऋण = ₹ 1,00,000

कुल दायित्व और शुद्ध आय = ₹ 4,00,000

कुल सम्पत्तियाँ = ₹ 4,00,000

$$\frac{\text{बिक्री}}{\text{कुल सम्पत्तियाँ}} = 2.5 = \frac{\text{बिक्री}}{4,00,000}$$

$$= ₹ 10,00,000$$

बेचे गए माल की लागत = (0.9) (₹10,00,000) = ₹ 9,00,000

$$\frac{\text{बेचे गए माल की लागत}}{\text{इन्वेंट्री}} = \frac{9,00,000}{\text{इन्वेंट्री}} = 9$$

$$= \text{इन्वेंट्री} = ₹ 1,00,000$$

$$\frac{\text{प्राप्तियाँ} \times 360}{10,00,000} = 18 \text{ दिन}$$

प्राप्तियाँ = ₹ 50,000

$$\frac{\text{पूँजी} + 50,000}{1,00,000} = 1$$

पूँजी = ₹ 50,000

संयंत्र एवं उपकरण = ₹ 2,00,000

आर्थिक चिट्ठा

दायित्व	(₹)	सम्पत्तियाँ	(₹)
पूँजी	50,000	नोट्स एवं देयताएँ	1,00,000
प्राप्तियाँ खाते	50,000	दीर्घावधि ऋण	1,00,000
इन्वेंट्री	1,00,000	सामान्य स्टॉक	1,00,000
संयंत्र एवं उपकरण	2,00,000	प्रतिधारित आय	1,00,000
कुल सम्पत्ति	4,00,000	कुल दायित्व और इक्विटी	4,00,000

